

वैदिक आर्य समाज के संस्थापक



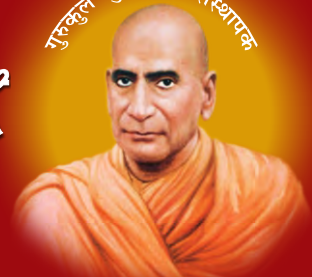
स्वामी दयानन्द सरस्वती

ओ३म्

गुरुकुल दर्शन

वैदिक एवं राष्ट्रीय मूल्यों का संवाहक

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के संस्थापक



स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती

गुरुकुल कुरुक्षेत्र का मुख पत्र

वैसाख वि. स. 2075 • कलियुगाब्द 5119 • वर्ष : 05 • अंक : 04 • अप्रैल 2018



‘गुरुकुल शिक्षा उत्सव में पहुंचे मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर’

स्वामित्व :

गुरुकुल कुरुक्षेत्र (हरियाणा)-136 119

(केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् नई दिल्ली से 10+2 तक सम्बद्ध)

दूरभाष: 01744-238048, 238648

E-mail : kurukshetraturukul@gmail.com Website : www.gurukulkurukshetra.com

AN ISO 2008 CERTIFIED INSTITUTE



महर्षि दयानन्द के परम् शिष्य,
आर्यसमाज के प्रसिद्ध
वक्ता एवं विद्वान्
पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी
के जन्मदिवस (26 अप्रैल)
की हार्दिक शुभकामनाएँ

समाज सुधार की झलकियाँ



रोहतक में आयोजित कृषि नेतृत्व सम्मेलन में केन्द्रीय मंत्री नितिन गडकरी, चौ. बीरेन्द्र सिंह व कृषि मंत्री ओ. पी. धनखड़ के साथ राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी



हिमाचल के नालागढ़ में व्यापारियों द्वारा आयोजित एक समारोह में मंचासीन महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी व मुख्यमंत्री श्री जयराम ठाकुर व अन्य महानुभाव



शिमला में 46वीं अखिल भारतीय पुलिस विज्ञान कांग्रेस में उपस्थित पुलिस अधिकारियों को सम्बोधित करते हुए महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी



एच.टी. स्कॉलरशिप परीक्षा में 25 हजार का नगद ईनाम प्राप्त करने वाले गुरुकुल के छात्र ब्र. अभिषेक राज को पुरस्कृत करते हुए राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी



आर्यसमाज स्थापना दिवस पर आर्यसमाज अंबाला छावनी द्वारा आयोजित समारोह को सम्बोधित करते हुए महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी



घरोडा स्थित आर्य सीनियर सैकेण्डरी स्कूल के छात्रावास भवन के उद्घाटन अवसर पर छात्रों को सम्बोधित करते हुए महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी



हिस्सार में आयोजित सिद्ध योगेश्वर श्री शुक्राईनाथ जी महाराज के शंकढाल कार्यक्रम में उपस्थित लोगों को सम्बोधित करते हुए आचार्य देवव्रत जी



शिमला में अंग्रेजी के प्रवक्ता जगदीश बाली की पुस्तक 'चल चला चल' के संशोधित संस्करण का विमोचन करते हुए महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी

ओ३म्

गुरुकुल दर्शन

‘सम्पादक परिवार’

संरक्षक	: आचार्य देवव्रत (महामहिम राज्यपाल, हि. प्र.)
मुख्य संपादक	: कुलवंत सिंह सैनी
मार्गदर्शक	: विश्वबंधु आर्य
प्रबंध-संपादक	: शमशेर सिंह
सह-संपादक	: आचार्य सत्यप्रकाश सूबेप्रताप आर्य सुखविन्द्रपाल आर्य नंदकिशोर आर्य
काजूनी सलाहकार	: राजेन्द्र सिंह ‘कलेर’
वित्तीय सलाहकार	: सतपाल सिंह
पत्रिका व्यवस्थापक	: राजीव कुमार आर्य
वितरण व्यवस्थापक	: समरपाल आर्य अशोक कुमार



गुरुकुल भूमिदाता
सेठ ज्योति प्रसाद जी



अनुक्रमणिका

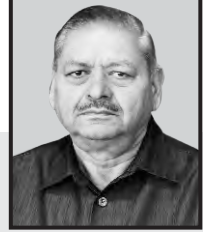
क्र. विवरण	पृ.सं.
1. सम्पादकीय : मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर का गुरुकुल भ्रमण	02
2. विनम्रता : एक श्रेष्ठ धन	03
3. शिक्षा क्यों, शिक्षा क्या ?	04
4. प्रेय मार्ग को पहचानें	06
5. आर्यावर्त के सदृश भूगोल में कोई देश नहीं	08
6. तैमूर को किसने हराया ?	10
7. उदारता, निर्भयता और संयम	13
8. वेदा वदन्ति	16
9. जल चिकित्सा : पानी से उपचार	17
10. गुरुकुल कुरुक्षेत्र की मधुर स्मृतियाँ	20
11. गृहस्थ में ईश्वर की प्राप्ति	21
12. गुरुकुल समाचार	22
13. जन्मदिवस पर विशेष : पं. गुरुदत्त विद्यार्थी	23
14. गुरुकुल कुरुक्षेत्र : संक्षिप्त परिचय	24

आवश्यक सूचनाएं

1. ‘गुरुकुल दर्शन’ मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण लेखकों के हैं, संपादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्याय-क्षेत्र कुरुक्षेत्र होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के अन्दर ही मानी जाएगी।
2. पत्रिका के विलम्ब अथवा अनियमित रूप से मिलने की स्थिति में चलभाष 8689002402 पर सूचना दें। पत्रिका के सम्बन्ध में आपकी प्रतिक्रिया और सुझाव की हमें अपेक्षा रहेगी।

- संपादक

कौशल मानव के वश में रहता है और मानव प्रतिभा के वश में।



मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर का गुरुकुल भ्रमण एवं उद्बोधन

गुरुकुल हमारी प्राचीन सभ्यता संस्कृति के परिचायक हैं। गुरुकुल का नाम सुनते ही मन में एक उल्लास का भाव जागृत होता है। गुरु वसिष्ठ के आश्रम में राम अपने भ्राताओं सहित अध्ययन करते हुए दृष्टिगोचर होते हैं। गुरु संदीपनी के आश्रम में राजा और रंक के पुत्र एक साथ पढ़ाई करते हुए प्रतीत होते हैं। कालक्रम में हमारी ये सांस्कृतिक धरोहर लुप्त होती चली गई, इसके मूल कारणों में न जाते हुए प्रमुख कारण लार्ड मैकाले की शिक्षा नीति रही। महर्षि स्वामी दयानन्द जी के आविर्भाव एवं उनकी प्राचीन वैदिक विचारधारा को आत्मसात् कर स्वामी श्रद्धानन्द जी ने 1902 में गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना कर अपने अतीत के गौरव को पुनः हम सबके सम्मुख रख दिया। इसी शृंखला में 13 अप्रैल 1912 को इस गुरुकुल की आधारशीला रख इस क्षेत्र के लोगों के लिए नई सौगात दी।

इस क्षेत्र की सर्वाधिक पुरानी संस्था जिसे 106 वर्ष हो गये हैं में आने का सौभाग्य मुझे मिला है। स्वामी श्रद्धानन्द जी की कर्मभूमि में आकर मैं अपने आपको धन्य अनुभव कर रहा हूँ। गत 34 वर्ष से निरन्तर इस गुरुकुल भूमि को अपने त्याग एवं तप से वर्तमान स्थिति तक पहुँचाने में जिन्होंने अपना बहुमूल्य समय प्रदान किया ऐसे आचार्य देवव्रत जी को साक्षात् पाकर स्वामी श्रद्धानन्द जी की अनुभूति हो रही है।

गुरुकुल का दिग्दर्शन करते हुए मेरी जानकारी में आया कि गुरुकुल का वर्तमान स्वरूप अनेक उतार-चढ़ाव के बाद प्राप्त हुआ है। आचार्य देवव्रत जी के निरन्तर प्रयासों से जो वर्तमान स्वरूप प्राप्त हुआ है इसे देखकर हम अपने आपको गौरवान्वित अनुभव कर सकते हैं। इन नवीन एवं भव्य-भवनों को देखकर आप अनुमान लगा सकते हैं कि कितना पुरुषार्थ इन सबके पीछे आचार्य जी का रहा है। उत्तर एवं पूर्वी भारत की शिक्षा का आधार इसको मान लें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। जिस प्रकार की शिक्षा पद्धति का सामंजस्य यहां पर प्रस्तुत किया गया है वह हम सबके लिए अनुकरणीय है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में जहाँ मानवीय मूल्यों का ह्रास होने लगा है, वहीं इन सबमें अब संस्कारों की सर्वाधिक आवश्यकता अनुभव की जाने लगी है और इन संस्कारों का केन्द्र यदि कुछ हो सकता है तो वह आचार्य देवव्रत जी द्वारा दिया गया यह शिक्षा संस्थान हो सकता है।

यहाँ केवल छात्रों की शिक्षा पर ही ध्यान केन्द्रित नहीं है अपितु जैसा मैंने देखा यहाँ समाज से सरोकार रखने वाले ऐसे प्रकल्प भी संचालित किये जा रहे हैं जो समाज को शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक रूप से सबल बनाने में सहयोगी सिद्ध हो सकते हैं।

प्राकृतिक चिकित्सालय जिसमें लाखों असाध्य रोगी ठीक हो चुके हैं। प्राकृतिक सन्तुलन बनाये रखने के लिए पौधशाला, अनुपलब्ध जड़ी-बूटियों के संरक्षण के लिए वनस्पति उद्यान, भूमि की उर्वरा शक्ति को बनाये रखने के लिए जीरो बजट प्राकृतिक कृषि का अनुसन्धान केन्द्र, देशी नस्ल की गायों का संरक्षण एवं संवर्धन करने के लिए गोशाला, सेना में सीधे अधिकारी बनाने के लिए एनडीए केन्द्र, उच्च पदों पर ईमानदार व्यक्तियों का प्रवेश हो इसके लिए आईआईटी, पीएमटी प्रशिक्षण केन्द्र, प्राचीन ग्रन्थों का संरक्षण, अनुसंधान एवं अध्ययन के लिए आर्ष महाविद्यालय, सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिए भजनोपदेशक प्रशिक्षण केन्द्र, देश को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के शूटर्स देने के लिए शूटिंग प्रशिक्षण की सुविधा, विशाल क्रीड़ा-क्षेत्र, छात्रों के स्वास्थ्य को ध्यान में रखकर यहां की 180 एकड़ भूमि में शून्य लागत प्राकृतिक कृषि के माध्यम से खेती की जा रही है। मुझे अपार प्रसन्नता है कि बिना सरकारी सहायता लिए यह गुरुकुल संस्थान इतने आयाम लिए हुए है।

'गुरुकुल शिक्षा उत्सव' में मात्र 300 सीटों के लिए 8000 छात्रों ने आवेदन किया, इसी बात से अनुमान लग जाता है कि इस संस्थान की स्वीकार्यता एवं विश्वसनीयता कैसी है? इस अनुपम पद्धति के लिए इससे बड़ा प्रमाण और क्या हो सकता है? इसी परम्परा में आचार्य देवव्रत जी ने बेटियों के लिए अन्तर्राष्ट्रीय कन्या गुरुकुल चमन वाटिका एवं छात्रों के लिए विस्तारित गुरुकुल नीलोखेड़ी की स्थापना की है।

वर्तमान समय में अच्छी गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा के साथ ही बालकों के चारित्रिक विकास के लिए बहुत सारी चुनौतियों का सामना हम कर रहे हैं। माता-पिता एवं विद्यालय बच्चों के सुधार में भरसक प्रयास कर लें उसके बाद भी टीवी, सोशल मीडिया, बाजार, बरगलाउ राजनीति खड़ी है जिसमें बालकों को संभालने के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है। इन सबके बीच गुरुकुल की यह वर्तमान शिक्षा प्रणाली ही एक मात्र ऐसा साधन है जो इन्हें इस दलदल में धंसने से बचा सकती है और बचा भी रही है। यहां योग, व्यायाम, जीवन-निर्माण एवं आधुनिक शिक्षा के साथ ही प्राचीन वैदिक संस्कारों एवं मूल्यों का प्रतिपादन बालकों में किया जा रहा है इसके लिए यहां की प्रबन्ध समिति, कर्तव्यनिष्ठ अध्यापकों एवं विभिन्न प्रकल्पों में कार्यरत कर्मचारियों को हार्दिक साधुवाद देता हूँ, बधाई देता हूँ। इस संस्थान में जहां विभिन्न राज्यों के बालक अध्ययनरत होकर लाभ उठा रहे हैं वहीं हिमाचल प्रदेश के बालक भी इसमें अध्ययन कर लाभ उठाएँ ऐसी कामना करता हूँ।

- कुलवंत सिंह सैनी

प्रतिभा एक प्रकार का आचरण है और आचरण भी एक प्रकार का आवरण है।

विनम्रता : एक श्रेष्ठ धन

बाल्यावस्था और युवावस्था को पार करते हुए व्यक्ति जब वृद्धावस्था के निकट पहुँच जाता है, तो उसका शरीर क्षीण और दुर्बल होने लगता है किन्तु उस समय उसका मन उल्लसित रहता है। उसका वह उल्लास स्थायी सम्पत्ति के समान जीवन के अन्त तक उसका साथ देता है। उस समय भी उसकी विनम्रता का भण्डार समय के दुष्प्रभाव से बचा रहता है अर्थात् उसके हृदय का उल्लास व उसकी विनम्रता नष्ट नहीं होते। इन दोनों के संयोग से ही उसे अपने जीवन के अतिरिक्त परलोक में भी उत्कृष्ट फल प्राप्त होता है। उल्लास और विनम्रता कभी नष्ट न होने वाली परमेश्वर की देन हैं, जिनके सम्मुख संसार की अन्य सम्पत्तियाँ नगण्य एवं तुच्छ हैं।

किसी व्यक्ति से जब कोई बलिदान मांगा जाये तो वह उसकी परीक्षा की घड़ी होती है। उस समय यह देखा जाता है कि वह व्यक्ति अपने आदर्श की प्राप्ति के लिए कितना बलिदान करने को तैयार है। आप कह सकते हैं कि आप अमुक काम करने के लिए तैयार हैं, किन्तु प्रश्न यह है कि आप अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए कितना बलिदान दे सकते हैं? कथनी और करनी में बहुत अन्तर होता है। अनेक लोग कहते हैं कि यदि उन्हें सामाजिक झंझटों से मुक्ति मिल जाए, उनके मार्ग में कोई बाधा न रहे, उन्हें बीमारी एवं दरिद्रता की आशंका न हो, तो वे भी अनेक महान् कार्य कर सकते हैं परन्तु सच्चाई इसके सर्वथा विपरीत है। संसार में काम करने वालों की बहुत कमी है। महान् काम उन्होंने ही सम्पन्न किये हैं जो प्रतिकूल परिस्थितियों में रहकर अपने जीवनोद्देश्य की प्राप्ति के लिए निरन्तर प्रयास करते रहे। इसके साथ ही वे लोग अनेक कष्टों, संकटों और पीड़ाओं से भी घिरे रहे। अनेक व्यक्ति यह इच्छा करते हैं कि यदि उन्हें कोई अवसर प्राप्त हो, तो वे कोई महान् कार्य करके दिखा सकते हैं, परन्तु जब उन्हें अवसर प्राप्त होता है तो वे कुछ भी नहीं कर पाते। सभ्यता और संस्कृति के शिखर पर पहुंचने वाले युवक और बुद्धिमान् व्यक्तियों ने घोर संघर्ष किये, जिनके कारण उन्हें अपने जीवन में कभी अवकाश के क्षण भी प्राप्त नहीं हुए।

सामान्यतः यह माना जाता है कि व्यस्त एवं सक्रिय जीवन-संघर्ष के कारण व्यक्ति की प्रवृत्ति नीरस हो जाती है व उसकी सौन्दर्यानुभूति नष्ट हो जाती है अथवा कुछ बुद्धिमान व्यक्ति ही जीवन की मृदुल भावनाओं की तह तक पहुंच सकते हैं परन्तु वास्तविकता यह है कि संकटों और विपत्तियों में फंसे विद्वानों ने ही संसार के सर्वश्रेष्ठ एवं महान् ग्रन्थ लिखे हैं। विपरीत परिस्थितियों में पड़ने के बाद भी न तो व्यक्ति की प्यास बुझती है और न उसके आदर्श नष्ट होते हैं। जब तक व्यक्ति स्वयं न चाहे, कुछ नहीं किया जा सकता।

कुछ व्यक्ति जीवन को एक कला मानते हैं, परन्तु अनेक व्यक्ति जीवन के कार्यों को अनिच्छापूर्वक ही पूरा करते हैं। वे अपने बहुमूल्य समय और प्रयत्न को निम्न उद्देश्यों तथा वासना की पूर्ति में ही नष्ट कर डालते हैं। यदि वे अपने प्रयत्नों को उत्साहपूर्वक पवित्र उद्देश्यों की पूर्ति में लगा दें तो वे भी महान् कार्य कर सकते हैं, जीवन को जीने की कला सीख सकते हैं। जीवित रहने के लिए व्यक्ति अपनी मानसिक और शारीरिक योग्यता को केवल धन कमाने के लिए ही नियोजित कर दे, इसे बुद्धिमानी नहीं कहा जा सकता। परमात्मा ने जो जीवन आपको प्रदान किया है, वह इतना निरर्थक नहीं कि आप अपने मूल्यवान् समय को भौतिक पदार्थों के संग्रह में ही नष्ट कर दें, किन्तु व्यक्ति का अधिकांश समय इस प्रकार के क्षणभंगुर पदार्थों के संग्रह में ही नष्ट हो जाता है। फिर भी उसे इस बात की अभिलाषा होती है कि वह अपने महान् आदर्शों को प्राप्त कर ले।

धन-दौलत और ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए व्यक्ति बड़े से बड़ा बलिदान कर सकता है, लेकिन आत्मा की श्रेष्ठता और व्यापकता के लिए कुछ भी नहीं कर पाता। जीवन-रूपी गाड़ी को चलाने के लिए उद्देश्य और संकल्प एक सीमा तक ही आवश्यक होते हैं किन्तु जब तक इच्छा-प्राप्ति के लिए प्रयास नहीं किया जाएगा, तब तक रेलगाड़ी नहीं चल सकेगी। साधारण गरम पानी से इंजन नहीं चल सकता। जब आपकी दृष्टि ही छोटे-छोटे पदार्थों पर टिकी रहेगी, तो आपको अपने आसपास की चीजें ही दिखाई देंगी, उच्च और महान् उद्देश्य दूर दिखाई देंगे। ये छोटे-छोटे पदार्थ और साधारण उद्देश्य आपके लक्ष्य की प्राप्ति में बाधक बन जाते हैं। अनेक व्यक्ति साधारण जीवन व्यतीत कर रहे हैं, उनमें हैडक्लर्क, वकील अथवा इंजीनियर यदि सफल व्यक्ति भी होते हैं परन्तु वे भी अपने उच्च आदर्श को प्राप्त नहीं कर पाते और साधारण पदार्थों की प्राप्ति के लिए अपने जीवन का बलिदान कर देते हैं, अपनी स्वाभाविक योग्यता को धन-दौलत आदि की वेदी पर न्यौछावर कर देते हैं, अपने महान् उद्देश्यों को सोने-चांदी के चन्द सिक्कों के बदले बेच डालते हैं। वे मानव के रूप में भी असफल और अभागे ही सिद्ध होते हैं।

यह आवश्यक नहीं कि धन को नैतिकता से अधिक महत्त्व दिया जाए लेकिन साधारण प्रसिद्धि और सामान्य विचारों के कारण व्यक्ति लोक-कल्याण के मार्ग से भटक जाते हैं। आपका जीवन और उसका वास्तविक उद्देश्य सच्चे मोती के समान है। उसके सम्मुख सांसारिक सुख अत्यन्त तुच्छ है। मानव-जीवन का आदर्श

...श्रेष्ठ पृष्ठ 5 पर

शिक्षा क्यों, शिक्षा क्या?

हम बच्चों को स्कूल भेजते हैं, हम बच्चों को पढ़ाते हैं या हम पढ़ते हैं कभी सोचा क्यों? पूछ लो किसी भी अभिभावक से, अध्यापक से या विद्यार्थी से, उत्तर आएगा - अच्छा इंसान बनने के लिए ताकि सभी की खुशहाली के लिए, खुशहाल जीवन जी सके। भावना यह ठीक है परन्तु पूछ लो किसी से, अच्छे इंसान का मतलब क्या? कैसा आचरण, कर्म, जीवन जीने वाले को कहेंगे अच्छा इंसान? शायद उत्तर मिलना मुश्किल हो जाए।

मित्रों! हम चाहते हैं कि शिक्षा प्राप्त करके हम अच्छे इंसान बनें, खुशहाल जीवन जीयें परन्तु जब अच्छे इंसान की परिभाषा ही नहीं पता तो बनोगे कैसे? हाँ, अच्छे इंसान से मतलब, अच्छी नौकरी यानि बड़े पैकेज वाली नौकरी, उसमें से हम थोड़ा पैसा गरीब व्यक्तियों के विकास में लगा दें, बेईमानी ना करें, झूठ ना बोले, कानून का पालन करें आदि परिभाषाएं निकल कर आती हैं। सवाल है, इससे अच्छे व्यक्ति की परिभाषा परिभाषित होती है क्या?

मान लो, एक बच्चा बचपन से पूरी मेहनत से पढ़कर अच्छे नम्बरों से पास हुआ, बड़े पैकेज वाली नौकरी भी मिल गयी, शादी भी हो गई, बाल-बच्चे भी हो गये, परिवार में मिलजुलकर रहता है, बच्चों को प्यार से रखता है, अपनी तनख्वाह में से 25 प्रतिशत गरीबों को भी देता है, तो वह अच्छा व्यक्ति है ना? सब कहेंगे ठीक। पर मैं शायद सन्तुष्ट नहीं, क्योंकि वह व्यक्ति प्रकृति व समाज से ले ज्यादा रहा है, दे बहुत कम रहा है। उसकी जीवन-शैली के कारण पर्यावरण को भी खतरा हो गया है। हवा, पानी, भोजन जहरीला हो गया जिस कारण से दुनिया में तनाव, भय, भ्रष्टाचार, बीमारी व युद्ध भी बढ़े हैं क्योंकि अच्छे इंसान की परिभाषा है कि वो सबके लिए आदर्श बने, अनुकरणीय बने परन्तु आज का यह अच्छा इंसान अनुकरणीय बन ही नहीं सकता। जहाँ उसे लाख-दो लाख से लेकर पांच लाख महीने तक की आय है, वहीं करोड़ों लोगों के पास जिन्दगी में भी 5 लाख देखने की व्यवस्था नहीं। इस प्रकार यह अच्छा व्यक्ति करोड़ों लोगों के जीवन में निराशा पैदा करता है। यह व्यक्ति लेता ही लेता है, देता बहुत कम है। विचार करो, दुनिया को देने वाला व्यक्ति बड़ा होगा या दुनिया को लूटने वाला, दुनिया को भोगने वाला?

आज का यह अच्छा आदमी, आज का यह डिग्रीधारी, पढ़ा-लिखा व्यक्ति, आज का यह विकसित आदमी, लाखों व्यक्तियों के हिस्से पर कब्जा करे बैठा है और लाखों व्यक्तियों के हिस्से के संसाधन अकेला भोग रहा है। समाज में गहरी आर्थिक विषमता का कारण बन गया है जिसके कारण करोड़ों लोग पशु से भी बदतर भय और अभाव का जीवन जीने के लिए मजबूर हैं, तनाव

व अविश्वास का जीवन जीने को मजबूर है जबकि प्रकृति में संसाधन निश्चित है, प्रकृति में व्यवस्था भी निश्चित है परन्तु जब मुट्ठीभर लोग सारे संसाधनों पर कब्जा कर लेंगे तब अव्यवस्था तो फैलेगी ही। कहीं वर्तमान की अव्यवस्था का कारण तो नहीं बन गया अच्छा आदमी?

शिक्षा क्यों? सवाल यह है। मेरी समझ कहती है कि शिक्षा की जरूरत मानव के बच्चों को ही है, पशु-पक्षी को नहीं क्योंकि पशु-पक्षी वंश अनुषंगी होता है। जैसा आचरण, जैसा कर्म उसके माता-पिता का वैसा आने वाली पीढ़ी का। परन्तु मनुष्य के साथ ऐसा नहीं। मनुष्य संस्कार अनुषंगी है। जैसे बचपन में संस्कार होंगे, जैसा उसे समझाया या सिखाया जाएगा, वैसा ही वह बनेगा। मनुष्य सोच के हिसाब से जीता है। मनुष्य के पास समझने की, सोच-विचार करने की अद्भुत क्षमता है, मनुष्य के पास सीखने की, कर्म करने की, निर्माण करने की अद्भुत क्षमता है, बस आवश्यकता है उसकी दिशा ठीक तरफ ले जाने की और ये कार्य हैं आज के अभिभावकों का।

सही दिशा क्या है? एक बच्चा बड़ा होकर सबका सहयोगी बने, खुशहाली का कारण बने। सबका मतलब क्या? ध्यान से देखोगे तब साफ दिखेगा कि चार अवस्थाएं हैं, मोटे-मोटे रूप में, अस्तित्व में। पदार्थ है, प्राण है, जीव है तथा ज्ञान है और चार व्यवस्थाएं बनानी हैं मानव को। चार हैं, चार बनानी हैं। पहली चार अवस्थाएं पदार्थ, प्राणी, जीव व ज्ञान। दूसरी चार व्यवस्थाएं बनानी हैं कि मैं अपने साथ, परिवार के साथ, समाज के साथ, प्रकृति के साथ जैसे जीता हूँ? पहली अवस्थाओं को समझना है। दूसरी व्यवस्थाओं को समझ के साथ बनाना है ताकि सबके साथ पूरक, सहयोगी, तालमेल के साथ जी सके, यही शिक्षा का लक्ष्य है। पदार्थ यानि हवा, पानी, धरती, खनिज, ग्रह : गोल, प्राण यानि पेड़-पौधे, जड़ी-बूटियां, जीव यानि पशु-पक्षी, ज्ञान यानि मानव। अर्थात् एक बच्चा बड़ा होकर पढ़-लिखकर चारों अवस्थाओं का सहयोगी, पूरक, खुशहाली का कारण बने क्योंकि वह बन सकता है, बनने की क्षमता है, मतलब पढ़-लिख कर मानव, मानव का व मानव प्रकृति का पूरक बने। मानव, मानव का पूरक, सहयोगी मतलब मानव अपने साथ, परिवार के साथ, समाज के साथ, प्रकृति (हवा, पानी, धरती) के साथ जीना सीख जाए क्योंकि मनुष्य के पास समझने की, निर्माण की क्षमता है।

शिक्षा क्यों? स्पष्ट होता है कि शिक्षा क्या? अब सवाल उठता है, अपने परिवार, समाज, प्रकृति के साथ जीने की कला, जीने से पहले उनको समझना होगा मानव क्यों, क्या, किसलिए?

प्रतिभा केवल स्वतंत्र वातावरण में स्वतंत्रतापूर्वक इवाच ले सकती है।

परिवार क्यों, क्या, किसलिए? समाज क्यों, क्या, किसलिए? प्रकृति क्यों, क्या, किसलिए? प्रकृति में जीव, प्राण, पदार्थ अवस्थाओं को समझना, उनके प्रयोजन को समझना, उनकी भूमिकाओं को समझना, उनके रूप, गुण, स्वभाव व धर्म को समझना, उनके साथ अपने रिश्तों एवं सम्बन्धों को समझना होगा। सम्बन्धों को समझेंगे तो सम्बन्धों में जीयेंगे ना। शिक्षा क्या? मतलब इस अस्तित्व में हर इकाई क्यों, क्या किसलिए? उनका एक-दूसरे के साथ क्या सम्बन्ध है, क्या उपयोगिता है, उसे समझना, जीना, समझाना, आने वाली पीढ़ी को। हम कुदरत की व्यवस्था को समझते नहीं, मानव के प्रयोजन एवं भूमिका को समझते नहीं, बस लग गये कार्य करने। तब दिशाविहीन तो होंगे ही ना। उसी का परिणाम है, चारों तरफ अविश्वास, द्वन्द्व, तनाव, भय, अभाव, युद्ध, आतंक व बढ़ती हत्या व आत्महत्याएं, जो ठीक नहीं हैं।

यहाँ सार यह निकल कर आया कि शिक्षा क्यों? उत्तर है, मानव की आने वाली पीढ़ी को सही समझ और सही दिशा देने के लिए ताकि वह बड़ा होकर स्वयं, परिवार, समाज और प्रकृति के साथ पूरकता और खुशहाली के साथ जी सके। भूख, भय, भ्रष्टाचार से मुक्त होकर जी सके, विश्वास, सम्मान, स्नेह, प्रेम के साथ जी सके। अब यदि पढ़-लिख कर कोई व्यक्ति ऐसा जी पा

रहा है तो वह अच्छा इंसान है, वह वास्तव में सफल, खुशहाल व कामयाब और मानव कहलाने का अधिकारी व आने वाली पीढ़ी का आदर्श? अन्यथा उसके पास सूचनाएं हैं, डिग्रीयाँ हैं और मशीन के माफिक उसका जीवन है। इंसान तो नहीं बना, हाँ मशीन जरूर बन गया और भ्रमित अवस्था में है जो समाज व प्रकृति का विनाश ही करेगा, जैसा कि आज चारों ओर दिख रहा है।

शिक्षा क्या? जो है, जैसा है, जिस कारण है उसकी सही-सही समझ होना। चारों अवस्थाओं की समझ होना (पदार्थ, प्राण, जीव और ज्ञान)। मानव-मानव के बीच रिश्ते की समझ होना, एक-दूसरे के साथ कैसे खुशहाली पूर्वक जीना, उसकी समझ होना, मतलब मानव का मानव के साथ व्यवहार पक्ष, समझदारी का पक्ष और मानव का शेष प्रकृति के साथ कार्य, उत्पादन और कला की समझ को विकसित करना।

ये दोनों बातें होती है तब जाकर स्पष्ट होता है शिक्षा क्यों और शिक्षा क्या? दोनों बातें स्पष्ट हों, अभिभावकों को, अध्यापकों को और धीरे-धीरे बच्चों को। तब कहीं अपने मनुष्य जीवन की सार्थकता को समझेंगे, जीयेंगे और आने वाली पीढ़ी के लिए और ज्यादा खुशहाली का मार्ग बनाएंगे। तभी हम कह सकते हैं कि शिक्षा का मतलब 'अच्छा इंसान बनना'। - सत्यप्रकाश भारत

विनम्रता... पृष्ठ ३ का शेष

अत्यन्त बहुमूल्य है और उसकी चमक के सम्मुख सोने-चांदी की चमक हेय है। लोक-कल्याण के लिए जिन लोगों के नाम सूर्य के समान दमकते रहे हैं, उनके सम्मुख सदा ही उच्च लक्ष्य और आदर्श स्थिर रहे हैं। उन्होंने अपने उद्देश्य से कभी मुंह नहीं मोड़ा और अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए स्थिरता और दृढ़ता के साथ अपनी भरपूर शक्ति लगाते रहे। यदि आप भी अपनी आत्मा की उस आवाज को सुनते रहें, जो आपको सफलता के मार्ग की खोज करने के लिए प्रेरित करती है और उसी के अनुसार व्यवहार भी करें, तो आप कभी असफल नहीं हो सकते। जीवन में सर्वोच्च सफलता प्राप्त करने के लिए निष्ठा और सक्रियता महान् आदर्श हैं। अब वह समय दूर नहीं, जब मानव की सेवा और उसके सुधार के लिए सबकुछ बलिदान कर देने वाले व्यक्तियों को अत्यन्त सफल माना जाएगा।

धन का ढेर अथवा बैंक-बैलेंस नहीं, अपितु त्याग और बलिदान आपकी वास्तविक सम्पत्ति है। दानशील और परमार्थी व्यक्ति पारसमणि के समान होते हैं। उनका सम्पर्क होते ही कोई भी वस्तु सोना बन जाती है। ऐसे व्यक्तियों के सम्पर्क में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति को यह अनुभव हो जाता है कि उसने कुछ खोया नहीं है, अपितु कुछ पाया है। देखा जाए तो जो व्यक्ति जीवन को सुखद बनाने एवं मानवता का कल्याण करने के लिए प्रयत्न करते हैं, वे ही

कभी नष्ट न होने वाली सम्पत्ति है।

आज ऐसे ही अनेक यन्त्रों का आविष्कार हो चुका है जिनके द्वारा शारीरिक शक्ति के खर्च में कमी आ गयी है किन्तु सफल जीवन को मापने अथवा गुणों का अनुमान लगाने के लिए अभी तक कोई यन्त्र नहीं बना। यदि कोई ऐसा यन्त्र बन जाता, तो अनेक धनाढ्य लोक अपनी माप देखकर क्रोधित हो जाते तथा अनेक देशभक्त नेता अपनी प्रतिभा और सेवा का माप देखकर चकित रह जाते। किसी व्यक्ति की महत्ता का अनुमान उसकी आत्मा के मानदण्ड से किया जाना चाहिए। धन-सम्पत्ति, गगनचुम्बी इमारतें या बड़ी-बड़ी जागीरें नहीं अपितु नैतिक मूल्यों के आधार पर ही किसी व्यक्ति का जीवन लाभदायक बन सकता है। सज्जनता, सहृदयता और संस्कृति के बल पर ही आप अपने विरोधियों का मुंह बन्द कर सकते हैं, धन-सम्पत्ति के बल पर नहीं।

फिलिप बुक्स ने लिखा है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी वर्तमान स्थिति में एक बार यह अनुभव अवश्य होता है कि उसे क्या बनना है। उसे अपने सम्पूर्ण जीवन का कल्पित स्रोत अवश्य दिखाई देता है। परमात्मा ने मानव के हृदय में किसी न किसी लक्ष्य की स्थापना की है इसलिए कम से कम एक बार उसके मन में कल्याण, परोपकार एवं दूसरों की भलाई करने की इच्छा अवश्य जागृत होती है।

साभार : आचार्य चन्द्रप्रभ जी।

प्रतिभा का ही दूषण नाम शक्ति है।

प्रेय मार्ग को पहचाने



आचार्य दयाशंकर जी

प्रिय पाठकों! इससे पूर्व हम दो प्रकार की सत्ताओं के विषय में चर्चा कर चुके हैं। त्रैतवाद की समीक्षा करते हुए ऋषि दयानन्द ने तीन अनादि सत्ताएं स्वीकार की हैं - प्रथम, ईश्वर जो समस्त जड़ चेतन जगत् का स्वामी, सर्वद्रष्टा, सर्वसाक्षी रूप में समस्त ब्रह्माण्ड का

स्वामी जो पूर्ण रूपेण अविकारी तथा विकारी प्रकृतिमय जगत् की रचना करने हारा है। दूसरा, जीवात्मा जो प्रकृति के सान्निध्य में आकर प्राणों को प्राप्त कर मन के द्वारा भ्रमित हुआ आनन्दमय लोक मुक्ति से दूर होकर पुनः मुक्ति प्राप्ति हेतु अनेक शरीरों को प्राप्त कर आगे बढ़ना और अपने शुभ-अशुभ कर्मों द्वारा यथायोग्य सुख-दुःख रूपी फलों को प्राप्त करने हारा। तीसरा, प्रकृति (मूल) जो परमेश्वर प्राणी मात्र के उपभोग हेतु विशाल जगत् की रचना है। जो परमाणुमय जगत् अथवा दृश्यात्मक संसार है। उसी के अन्तर्गत हमारा यह स्थूल शरीर आता है। स्थूल प्रकृति जन्य भाव, गुण या उस पदार्थ का सार जो अदृश्य है वह भी प्रकृति की ही श्रेणी में आता है जैसे पुष्प दृश्यमान है, उसकी सुगन्ध अदृश्य किन्तु वह भी प्राकृतिक ही है।

इसका उपयुक्त प्रमाण यह है कि वह गन्ध बाह्येन्द्रिय नासिका द्वारा ग्राह्य है, सिद्धान्त यह है कि जो पदार्थ स्थूल प्रकृति (बाह्येन्द्रियों) द्वारा ग्राह्य हो सकता है वह भी स्थूल प्रकृति ही होगा क्योंकि पाँच ज्ञानेन्द्रियों के पाँच विषय है जो स्थूल प्रकृति शरीर में स्थित पाँचों ज्ञानेन्द्रियों द्वारा ग्राह्य है। इसके विपरीत जो बाह्य पदार्थों से ग्राह्य नहीं है, बाह्य प्रकृति जन्य पदार्थों की सामर्थ्यता से परे जहाँ प्राकृतिक पदार्थों की पकड़ न पहुँच सके, वहाँ से आध्यात्म आरम्भ होता है। जितना सत्य अदृश्यात्मक आध्यात्म (ब्रह्म) जगत् है उससे न्यून सत्य एवं केवल्य प्राप्ति में उपयोगी ब्राह्म जगत् भी नहीं है क्योंकि आध्यात्म में जाने का मार्ग ब्राह्म जगत् से ही आरम्भ होता है

“अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते”

(यजुर्वेद अ. 40, मं. 14)

अविद्या अर्थात् शारीरिक क्रियाओं से ही शारीरिक जन्मादि बन्धनों से मुक्त होकर मृत्यु पर विजय प्राप्त करके (विद्या) अर्थात् आध्यात्म अमृत तत्त्व ब्रह्मानन्द जो परमानन्द है उसकी प्राप्ति की जा सकती है।

महात्मा विदुर ने शरीर की रथ से तुलना करते हुए लिखा है -

“रथः शरीरः पुरुषस्य राजन् आत्मानियन्तेन्द्रियाण्यस्य चाशवाः”
अर्थात् शरीर रथ तथा इसके भीतर व्याप्त आत्मा इसका रथी (यात्री) है। इस भौतिक शरीर के बिना आत्मा एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकता। अब तुलना कीजिए जो लोग कहते हैं :-

“ब्रह्म सत्यं जगत् मिथ्या”

अर्थात् ब्रह्म अथवा आत्मतत्त्व ही सत्य है, यह जगत् मिथ्या स्वप्नवत् है तो भौतिक शरीर जो बाह्य जगत् है उसके बिना आत्मा गति क्यों नहीं कर सकता? यहाँ ऋषि दयानन्द के त्रैतवाद सिद्धान्त की पुष्टि होती है। अतः जितना सत्य आध्यात्म है उतना ही सत्य बाह्य जगत् है। वेद का उपदेश है :-

“तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा”

(यजुर्वेद, अ. 40, मंत्र 1)

यदि बाह्य जगत् को निःस्वार्थ तथा त्याग भावना से भोगा जाए तो भी आध्यात्म में कोई बाधा नहीं अपितु सहायक है। कठोपनिषद् में इस विषय की पुष्टि में निम्न श्लोक सार्थक है :-

आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु,

बुद्धि तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव च ॥

(कठोपनिषद् वल्ली 3, श्लोक 2)

अर्थात् यह आत्मा इस शरीर रूपी रथ का यात्री (रथी) है। इस रथ को हाँकने वाला सारथी बुद्धि है। इस रथ में जुते हुए घोड़े पाँच इन्द्रिय हैं। घोड़ों को नियंत्रण में रखने वाली लगाम ये मन है। यदि सारथी कमजोर, अज्ञानी, विवेकशून्य है तो इस रथ को विपरीत दिशा की ओर हाँक ले जाता है। कठोपनिषद् में कहा गया है :-

यस्त्वविज्ञानवान् भवत्ययुक्तेन मनसा सदा ।

तस्येन्द्रियाण्यवश्यानि दुष्टाश्वा इव सारथेः ॥

(कठोपनिषद् वल्ली 3, श्लोक 5)

अर्थात् जो अज्ञान से आवृत होता है तथा जिसका मन एकाग्रचित्त न होकर विषयों में भटकता है उसकी इन्द्रियाँ भी उसके वश में नहीं होती। वे दुष्ट घोड़ों की भाँति सारथी के वश में नहीं रहती जिधर चाहे वे स्वतंत्र रूप से लेकर चलती हैं। इसके विपरीत :-

यस्तु विज्ञानवान् भवति युक्तेन मनसा सदा ।

तस्येन्द्रियाणि वश्यानि सदश्वा इव सारथेः ॥

(कठोपनिषद् वल्ली 2, श्लोक 6)

जो सारथी विज्ञानवान् जिसका आत्मा मन के अनुकूल नहीं अपितु मन आत्मा के अनुकूल है अति सात्विक विचारवान् है। ये इन्द्रिय रूपी घोड़े सदा उसके वशीभूत होते हैं। इस प्रकार विज्ञानवान् सारथी श्रेष्ठ घोड़ों की भाँति नियंत्रित कर इस रथ को अपने लक्ष्य

की ओर अपने गन्तव्य मार्ग की दिशा में लेकर आगे बढ़ता है। बड़ी सावधानी के साथ तथा जागरूकता से, सात्विक मनोभाव से, उस प्रकाशवान्, आनन्दस्वरूप परमात्मा का गायत्री मंत्र द्वारा सदबुद्धिकी प्रार्थना करता हुआ, मनोविकारों को निर्मल करता हुआ, मुक्तिमार्ग का अनुसरण करता है। यह सभी क्रियाएं भौतिक ही हैं जो आध्यात्म मार्ग का साधन रूप हैं।

प्रत्येक व्यक्ति का जीवन एक रणभूमि है। इसमें विजय प्राप्त करने के लिए कठिन संघर्ष करना पड़ता है। इस युद्धक्षेत्र में एक चक्रव्यूह की रचना की गई है जिसमें आठ द्वार हैं। आठों द्वारों पर सेना तैनात है जिसका पहला द्वार -यम, दूसरा-नियम, तीसरा -आसन, चौथा -प्राणायाम, पाँचवां -प्रत्याहार, छठा -धारणा, सातवाँ- ध्यान तथा आठवाँ -समाधि हैं। इस आठ द्वारों में प्रथम पाँच द्वार भौतिक (प्राकृतिक) हैं शेष तीन आध्यात्मिक हैं। हमने प्रथम इस बात की पुष्टि की थी कि आध्यात्मिक मार्ग भौतिक मार्ग से ही होकर गुजरता है।

भौतिकवाद में पाँच की संख्या प्रसिद्ध है जैसे भौतिकता के विषय में 'प्रपञ्च' कहा जाता है। पञ्चमहाभूत, पञ्चप्राण, पञ्चेन्द्रियाँ, पञ्चमहायज्ञ आदि। तीन संख्या आध्यात्मिक - तीन आचमन, जो अध्यात्म के प्रतीक रूप हैं जैसे वाणी भौतिक है किन्तु तज्जन्य सत्य आध्यात्मिक, धन, सम्पत्ति भौतिक है किन्तु सत्पात्रों में उसका दान अथवा उपयोग आध्यात्मिक फल प्रदान करता है। कर्म भौतिक शरीर द्वारा होता है किन्तु संस्कार आध्यात्मिक ऐसे ही त्रिलोक, अनादि सत्ताएँ -3, त्रिविध दुःख, वेद त्रयी (ज्ञान, कर्म, उपासना) आदि।

अब मूल चर्चा पर आते हैं। अध्यात्म के बिना प्रकृति और प्रकृति के बिना अध्यात्म अपूर्ण एवं अधूरा है जैसे बिजली का बल्ब नहीं है तो बिजली का होना न होना एक जैसा है। इसके विपरीत यदि विद्युत् नहीं है तो बल्ब का कोई अर्थ नहीं। दोनों की सत्ता अति आवश्यक है। बिना बिजली के केवल बल्ब से तथा बिना बल्ब मात्र बिजली से प्रकाश होना असम्भव है अतः शरीर तथा आत्मा का यही सम्बन्ध है, दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। एक दृश्यात्मक सत्ता है जो दिखाई पड़ती है, एक अदृश्यात्मक सत्ता है जो दिखाई नहीं देती किन्तु सत्य यह है कि दृश्यात्मक सत्ता का अस्तित्व अदृश्यात्मक सत्ता पर टिका है यदि वह है तो इसका (शरीर) का अस्तित्व है और जैसे वह निकल गई उस स्थिति में यह (शरीर) बेकार मिट्टी है। इसे घर से बाहर निकालने की शीघ्रता करते हैं किन्तु यह भी पूर्ण सत्य है कि भौतिक शरीर द्वारा जीवात्मा अपने परम लक्ष्य तक पहुँचने में समर्थ होता है। 'समुद्री जहाज बन्दरगाहों पर सजाने के लिए नहीं बनाये जाते' सामान्य नौका

और समुद्री जहाज में अन्तर यह होता है कि नौका सामान्य झंझावात का तथा तुच्छ भंवर का मुकाबला भी नहीं कर सकती इसलिए छोटी-छोटी नदियों में एक किनारे से दूसरे किनारे तक छोटा-सा सफर तय करने के लिए होती है। इसके विपरीत समुद्री जहाज विशाल समुद्र में उठती हुई भयंकर लहरों को चीरता हुआ, झंझावातों से खेलता हुआ, भयानक विशाल बर्फीले पर्वत जैसी वस्तुओं को निगल जाने वाले भंवरों का धैर्य से सामना करता हुआ हजारों टन सामान को लेकर समुद्र को पार करता है। ठीक इसी प्रकार यह शरीर भी वही जलपोत है, जो संसाररूपी विशाल सागर को पार जाने के लिए ही परमात्मा ने जीवात्मा को प्रदान किया है जहाँ कमजोर व्यक्ति सामान्य नौका की भाँति होकर छोटी-सी लहर आते ही डूब जाते हैं, खो जाते हैं वहीं कुछ लोग इसे विशाल सागर में उतार कर द्वन्द्वों की चुनौतियों को स्वीकार कर उन चुनौतियों से आँख में आँख मिलाकर टकरा जाते हैं और उन्हें धराशायी कर उनके ऊपर से होते हुए आगे बढ़ जाते हैं। वे झंझावात, भंवर तथा विशालकाय मगरमच्छ जैसे समुद्री शिकारी और भयानक लहरें कौन-सी हैं और आठ द्वारों का वर्णन आगामी अंक में करेंगे।

- आचार्य दयाशंकर जी

संस्कृत प्राध्यापक, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

अन्याय से धन कमाने का दुष्परिणाम

अन्याय से धन कमाने का क्या परिणाम होता है? इस विषय में एक सत्य घटना है। वेद धन कमाने के लिए निषेध नहीं करता। धन कमाओ, परन्तु धर्म एवं न्यायपूर्वक। हमारे शास्त्र कहते हैं :-

अन्यायेनागता लक्ष्मी खद्योत इव दीप्यते ।

क्षणं प्रकाश्य वस्तूनि निर्वाणे केवलं तमः ।।

अर्थात् अन्याय से कमाया हुआ धन जुगनू की भाँति चमकता है परन्तु थोड़ी देर प्रकाश कर पुनः अन्धकार-ही-अन्धकार का साम्राज्य हो जाता है। अतः मनुष्य को चाहिए :-

अदत्त्वा परसन्तापमगत्वा खलनम्रताम् ।

अनुत्सृज्य सतां मार्गं यत्स्वल्पमपि तद्बहु ।।

अर्थात् किसी को कष्ट न देकर, दुर्जनों के सामने न झुककर और सन्मार्ग को न छोड़कर जो थोड़ा भी कमाया जाता है वही बहुत है।

साभार : 'आदर्श परिवार' पुस्तक

लेखक : स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

झूठे व्यक्ति की प्रतिष्ठा भी झूठी होती है।

आर्यावर्त के सदृश भूगोल में कोई देश नहीं



मनमोहन आर्य

जिसके सदृश भूगोल में दूसरा कोई देश नहीं है इसीलिये इस भूमि का नाम सुवर्णभूमि है क्योंकि यही सुवर्णादि रत्नों को उत्पन्न करती है। इसीलिये सृष्टि के आदि में आर्य लोग (आर्यावर्त के प्रदेश तिब्बत से सीधे) इसी (निर्जन) देश में आकर बसे। ऋषि दयानन्द जी यह भी लिखते हैं कि आर्य नाम उत्तम पुरुषों का है और आर्यों से भिन्न मनुष्यों का नाम दस्यु है। जितने भूगोल में देश हैं वे सब इसी देश की प्रशंसा करते और आशा रखते हैं कि पारसमणि पत्थर सुना जाता है, वह बात तो झूठी है परन्तु आर्यावर्त देश ही सच्चा पारसमणि है कि जिसको लोहेरूप दरिद्र विदेशी छूते के साथ ही सुवर्ण अर्थात् धनाढ्य हो जाते हैं। अपने विचारों के समर्थन में ऋषि दयानन्द ने मनुस्मृति का एक श्लोक उद्धृत किया है। श्लोक है :-

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशाद् अग्रजन्मनः ।

स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः ॥

इस श्लोक का अर्थ व इसमें कही गई बातों की पृष्ठ भूमि पर प्रकाश डालते हुए ऋषि दयानन्द ने लिखा है कि सृष्टि से ले के पांच सहस्र वर्षों से पूर्व समय पर्यन्त आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती अर्थात् भूगोल में सर्वोपरि एकमात्र राज्य था। अन्य देशों में माण्डलिक अर्थात् छोटे-छोटे राजा रहते थे क्योंकि कौरव-पाण्डव पर्यन्त यहां के राज्य और राजशासन में सब भूगोल के सब राजा और प्रजा चले थे क्योंकि यह मनुस्मृति जो सृष्टि की आदि में हुई है उस का प्रमाण है।

इसी आर्यावर्त देश में उत्पन्न हुए ब्राह्मण अर्थात् विद्वानों से भूगोल के मनुष्य ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, दस्यु, म्लेच्छ आदि सब अपने-अपने योग्य विद्या चरित्रों की शिक्षा और विद्याभ्यास करें। और महाराज युधिष्ठिर जी के राजसूय यज्ञ और महाभारत युद्ध पर्यन्त यहां के राज्याधीन सब राज्य थे।

आर्यावर्त अर्थात् भारत अतीत में तो विश्व का गुरु और संसार का सबसे उत्तम देश था ही, अनेक विशेषताओं के कारण यह आज

भी विश्व का सर्वोत्तम देश है। हाँ, यह स्वीकार करना पड़ता है कि इस देश में अविद्या से प्रभावित मत-मतान्तरों ने इस देश की प्राचीन श्रेष्ठता को निम्नतर या न्यून किया है। भारत में छह ऋतुएं होती हैं जो संसार के किसी देश में नहीं होती। यह भी एक कारण है। इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण भारत संसार का सबसे प्राचीन राष्ट्र है।

भारत व आर्यावर्त देश का इतिहास कुछ सौ या हजार वर्षों का नहीं है, जैसा कि संसार के अन्य देशों का है, अपितु भारत का इतिहास 1.96 अरब वर्ष पुराना है। भारत में पांच हजार वर्ष पूर्व महाभारत का युद्ध हुआ था। जिसका वर्णन ऋषि वेदव्यास रचित महाभारत ग्रन्थ में मिलता है। आज भी यह ग्रन्थ सुरक्षित है और इसके अनेक संस्करण व टीकायें मिलती हैं। जिस समय महाभारत युद्ध हुआ था उस समय भारत सहित विश्व में सर्वत्र वैदिक मत प्रचलित था। बौद्ध, जैन, ईसाई व इस्लाम मतों की उत्पत्ति तब नहीं हुई थी। वर्तमान में विश्व में प्रचलित सभी मत, पन्थ, सम्प्रदाय, धर्म या मजहब महाभारत के बाद उत्पन्न हुए हैं। महाभारत का युद्ध लगभग पांच हजार दो सौ वर्ष पूर्व हुआ था। महाभारत से भी न्यूनतम 8.62 लाख पूर्व भारत भूमि में मर्यादा पुरुषोत्तम राम का जन्म हुआ था। अयोध्या उनकी जन्म भूमि है। उन्होंने लंका के राजा रावण को युद्ध में पराजित किया था और भारत में वेद की मान्यताओं पर आधारित विश्व का श्रेष्ठतम राज्य स्थापित किया था जिसे रामराज्य के नाम से जाना जाता व याद किया जाता है। रामायण व महाभारत काल तथा सृष्टि के आरम्भ से लेकर महर्षि दयानन्द तक भारत भूमि में ऋषि, योगी, मुनि, यति, महात्मा, महापुरुष, देव, देवियाँ आदि बड़ी संख्या में उत्पन्न होते रहें जिनके कारण भारत भूमि स्वर्ग व देवभूमि थी।

सृष्टि के आदि काल में मनुष्यों की उत्पत्ति भी तिब्बत में हुई थी। यह तिब्बत तब आर्यावर्त का भाग होता था। समय के साथ इतिहास व भूगोल बदले और कुछ शताब्दियों पूर्व तिब्बत व आर्यावर्त के बहुत से भाग भारत के नियन्त्रण से जाते रहे। इसका कारण ऋषि दयानन्द ने महाभारत के विनाशकारी युद्ध को माना है। ऋषि दयानन्द की यह बात है भी प्रामाणिक। इसलिये प्रामाणिक है कि इसके अतिरिक्त देश के पतन का और कोई कारण दृष्टिगोचर नहीं होता। आदि सृष्टि तिब्बत में होने के बाद परमात्मा ने संसार को चलाने के लिए मनुष्यों को वेद ज्ञान प्रदान किया था। यह वेद ज्ञान ही संसार की सभी भाषाओं सहित ज्ञान व विज्ञान का आदि कारण है। वेद संस्कृत में हैं और संस्कृत भाषा विश्व की सभी भाषाओं की जननी व माता के समान है। यदि माँ न हो तो सन्तान

प्रणय का जीवन अपने छोटे-छोटे क्षणों में भी बहुत कीर्णजीवी होता है।

नहीं हो सकती। इसी प्रकार यदि संस्कृतरूपी माँ न होती तो संसार की कोई भी भाषा अस्तित्व में नहीं आ सकती थी।

वेद ज्ञान से हमारे सृष्टि के आदिकालीन ऋषि व राजा, अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा, ब्रह्मा, महाराज मनु आदि पूर्ण वेदज्ञानी हुए। सम्भावना है कि सृष्टि के आदि में हुए इन्हीं मनु महाराज ने भारत को मनुस्मृति जैसा राजधर्म व धर्मशास्त्र दिया था। इसके बाद समय-समय पर वेद ज्ञान पर आधारित ऋषियों द्वारा आवश्यकता के अनुरूप अनेक ग्रन्थों की रचना होती गई। मुगलों ने भारत पर आक्रमण कर हमारे तक्षशिला व नालन्दा आदि अनेक विश्वविद्यालयों के साहित्य को अग्नि की भेंट चढ़ा दिया था तथापि सौभाग्य से आज भी हमारे पास ब्राह्मण ग्रन्थ, दर्शन, उपनिषद्, आयुर्वेद, ज्योतिष, गृह्यसूत्र आदि विस्तृत साहित्य उपलब्ध होता है। इस वैदिक साहित्य में ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि, आर्याभिविनय, व्यवहारभानु आदि अनेक ग्रन्थ लिखकर वैदिक साहित्य को समृद्ध किया है। भारत में यह जो धार्मिक व दार्शनिक साहित्य है, ऐसा साहित्य विश्व में कहीं पर नहीं रचा गया। विश्व को यदि सही अर्थों में मानवीय मूल्य सहित सद्धर्म पर आधारित विश्व बनाना है तो बिना वेद व वेदानुकूल वैदिक साहित्य से विश्व में सच्चे मनुष्यों का निर्माण जो सच्चे ईश्वर उपासक, देशभक्त व विद्या-अविद्या को जानने वाले हों, करना सम्भव नहीं है।

आज भी भारत के पास धर्म व दर्शन के वे ग्रन्थ हैं जिनकी संसार के साहित्य से कोई समानता नहीं है। यह ग्रन्थ निर्भ्रान्त ज्ञान से प्रतिपादक ग्रन्थ हैं। इस ज्ञान से मनुष्य धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष प्राप्त कर अपने जीवन को सफल कर सकते हैं। आज संसार में सर्वत्र अपसंस्कृति का प्रचार हो रहा है। इसका समाधान भी वेद व वैदिक संस्कृति के द्वारा ही हो सकता है। वेद और वैदिक साहित्य मनुष्य को सही मायने में पूर्ण अहिंसक बनाते हैं। अहिंसा का अर्थ है कि अकारण किसी भी प्राणी को कष्ट न दिया जाये। वैदिकधर्म किसी भी प्राणी को अकारण कष्ट नहीं देते परन्तु वे देश व समाज की रक्षा व उसके प्राकृतिक धर्म जो कि वैदिक धर्म है, की रक्षा के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा सकते हैं। वेद मनुष्यों को अपने कर्तव्यों की पूर्ति के लिए अपना बलिदान करने की प्रेरणा देते हैं। वेद कहते हैं भूमि मेरी माता है और मैं पृथ्वी माता का पुत्र हूँ। वेद मनुष्य को कायर नहीं अपितु बलवान्, शूरवीर व पराक्रमी बनने का सन्देश देते हैं।

वैदिक विद्वान् डॉ. रामनाथ वेदालंकार ने वैदिक वीर गर्जना नाम से वेद मन्त्रों की सूक्तियों का चयन कर उनके हिन्दी अर्थों से सुशोभित एक पुस्तक की रचना की है जिससे वैदिक वीर का जीवन व चरित्र कैसा होता है, इस पर प्रकाश पड़ता है। अन्य अनेक

1250 वर्ष पूर्व तक आर्यावर्त



ग्रन्थ भी सभी मनुष्यों के कर्तव्यों का विधान करते हैं। क्षत्रियों का कार्य देश व समाज की रक्षा का होता है। वह किसी भी कीमत पर अपने कर्तव्य का निर्वाह करते हैं। इतिहास में इसके अनेक उदाहरण मिलते हैं।

भारत के सदृश आज भी विश्व का कोई देश नहीं है। ऐसा इस देश में वेद, दर्शन, उपनिषद्, रामायण, महाभारत, मनुस्मृति, आयुर्वेद, योग, ज्योतिष आदि अनेकानेक ग्रन्थों व उनका अध्ययन कर उसके अनुसार जीवन व्यतीत करने वाले व्यक्तियों के कारण से है। भारत की एक विशेषता इस देश का योगियों का देश होने के कारण से है। आज भी इस देश में स्वामी रामदेव एवं स्वामी सत्यपति जी सहित अनेक योगी व वेदों के विद्वान् हैं। जब तक भारत के पास वेद व इसके विद्वान् तथा वेदों का अध्ययन करने वाले आर्यसमाज के अनुयायी हैं, भारत विश्व में प्रमुख देश बना रहेगा। इसके साथ भारत के नागरिकों में जो अविद्या आदि के कारण अनेक बुराईयाँ आ गई हैं उनका निराकरण भी होना चाहिये। देश में विद्यमान अविद्या देश के लिए कलंक है। स्वामी दयानन्द जी ने व उससे पूर्व हमारे दर्शनकारों ने इस ओर ध्यान दिलाया था। यदि भारत से अविद्या दूर हो जाये तो भारत की सभी समस्याओं का निदान हो सकता है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सत्यार्थप्रकाश व उसकी शिक्षाओं के प्रचार व प्रसार की आवश्यकता है। भविष्य में क्या होगा कोई नहीं जानता? हम और गिरेंगे या उठेंगे, यह भविष्य की बात है, जिसका किसी को ज्ञान नहीं है। मनुष्यों का अधिकार कर्तव्य पालन में है। सभी सत्य को जानें और उसे जीवन में धारण करें तथा दूसरों को भी उसे अपनाने की प्रेरणा करें। समाज, देश व विश्व के सुधार का यही मंत्र है। ओ३म् शम्।

— मनमोहन कुमार आर्य

196, चुम्बूवाला-2, देहरादून 20081, मो-9412985121

साक्षी दुनिया को हिल देना चाहते हो तो सबसे पहले अपने आपको हिलाओ।

तैमूर को किसने हराया ?

हिन्दू समाज की सबसे बड़ी समस्या यह है कि वे जातिवाद से ऊपर उठ कर सोच ही नहीं सकते। यही पिछले 1200 वर्षों से हो रही उनकी हार का मुख्य कारण है। इतिहास में कुछ प्रेरणादायक घटनाएं मिलती हैं। जब जातिवाद से ऊपर उठकर हिन्दू समाज ने एकजुट होकर आक्रान्ताओं का न केवल सामना किया अपितु अपने प्राणों की बाजी लगाकर उन्हें यमलोक भेज दिया। तैमूर लंग के नाम से सभी भारतीय परिचित हैं। तैमूर के अत्याचारों से हमारे देश की भूमि रक्तंजित हो गई। उसके अत्याचारों की कोई सीमा नहीं थी।

तैमूर लंग ने मार्च सन् 1398 ई. में भारत पर 92000 घुड़सवारों की सेना से तूफानी आक्रमण कर दिया। तैमूर के सार्वजनिक कत्लेआम, लूट खसोट और सर्वनाशी अत्याचारों की सूचना मिलने पर संवत् 1455 (सन् 1398 ई.) कार्तिक बदी 5 को देवपाल राजा (जिसका जन्म निरपड़ा गांव जिला मेरठ में एक जाट घराने में हुआ था) की अध्यक्षता में हरियाणा सर्वखाप पंचायत का अधिवेशन जिला मेरठ के गाँव टीकरी, निरपड़ा, दोगट और दाहा के मध्य जंगलों में हुआ। सर्वसम्मति से निम्नलिखित प्रस्ताव पारित किये गये :-

- (1) सब गाँवों को खाली कर दो।
- (2) बालक और बुजुर्गों को सुरक्षित स्थान पर रखो।
- (3) सभी युवक सर्वखाप पंचायत की सेना में भर्ती हो जायें।
- (4) युवतियाँ भी पुरुषों की भांति शस्त्र उठायें।
- (5) दिल्ली से हरिद्वार की ओर बढ़ती हुई तैमूर की सेना का छापामार युद्ध-शैली से मुकाबला किया जाये तथा उनके पानी में विष मिला दो।

(6) 500 घुड़सवार युवक तैमूर की सेना की गतिविधियों को देखें और पता लगाकर पंचायती सेना को सूचना देते रहें।

पंचायती सेना : पंचायती झण्डे के नीचे 80,000 मल्ल योद्धा सैनिक और 40,000 युवा महिलायें शस्त्र लेकर एकत्र हो गये। इन वीरांगनाओं ने युद्ध के अतिरिक्त खाद्य सामग्री का प्रबन्ध भी सम्भाला। दिल्ली के सौ-सौ कोस चारों ओर के क्षेत्र के वीर योद्धा देश रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति देने रणभूमि में आ गये। सारे क्षेत्र में युवा तथा युवतियाँ सशस्त्र हो गये। इस सेना को एकत्र करने में धर्मपालदेव जाट योद्धा जिसकी आयु 95 वर्ष की थी, ने बड़ा सहयोग दिया था। उसने घोड़े पर चढ़कर दिन रात दूर-दूर तक जाकर नर-नारियों को उत्साहित करके इस सेना को एकत्र किया। उसने तथा उसके भाई करणपाल ने इस सेना के लिए अन्न, धन तथा वस्त्र आदि का प्रबन्ध किया।

प्रधान सेनापति, उप-प्रधान सेनापति तथा सेनापतियों की नियुक्ति : सर्वखाप पंचायत के इस अधिवेशन में सर्वसम्मति से वीर योद्धा जोगराजसिंह गुर्जर को प्रधान सेनापति बनाया गया। यह खूबड़ परमार वंश का योद्धा था जो हरिद्वार के पास एक गाँव कुंजा सुन्हटी का निवासी था। बाद में यह गाँव मुगलों ने उजाड़ दिया था। वीर जोगराजसिंह के वंशज उस गाँव से भागकर लंढेरा (जिला सहारनपुर) में आकर आबाद हो गये जिन्होंने लंढेरा गुर्जर राज्य की स्थापना की। जोगराजसिंह बालब्रह्मचारी एवं विख्यात पहलवान था। उसका कद 7 फुट 9 इंच और वजन 8 मन था। उसकी दैनिक खुराक चार सेर अन्न, 5 सेर सब्जी-फल, एक सेर गऊ का घी और 20 सेर गऊ का दूध।

महिलाएं वीरांगनाओं की सेनापति चुनी गईं उनके नाम इस प्रकार हैं :-

- (1) रामप्यारी गुर्जर युवती
- (2) हरदेई जाट युवती
- (3) देवीकौर राजपूत युवती
- (4) चन्द्रो ब्राह्मण युवती
- (5) रामदेई त्यागी युवती।

इन्होंने देशरक्षा के लिए शत्रु से लड़कर प्राण देने की प्रतिज्ञा की।

उपप्रधान सेनापति:-

- (1) धूला भंगी (वाल्मीकि) (2) हरबीर गुलिया जाट
- धूला भंगी** जीन्द हिसार के हांसी गाँव (हिसार के निकट) का निवासी था। यह महाबलवान, निर्भय योद्धा, गोरीला (छापामार) युद्ध का महान् विजयी धाड़ी (बड़ा महान् डाकू) था जिसका वजन 53 धड़ी था। उपप्रधान सेनापति चुना जाने पर इसने भाषण दिया कि 'मैंने अपनी सारी आयु में अनेक धाड़े मारे हैं। आपके सम्मान देने से मेरा खून उबल उठा है। मैं वीरों के सम्मुख प्रण करता हूँ कि देश की रक्षा के लिए अपना खून बहा दूंगा तथा सर्वखाप के पवित्र झण्डे को नीचे नहीं होने दूंगा। मैंने अनेक युद्धों में भाग लिया है तथा इस युद्ध में अपने प्राणों का बलिदान दे दूंगा।' यह कहकर उसने अपनी जांघ से खून निकालकर प्रधान सेनापति के चरणों में उसने खून के छींटे दिये। उसने म्यान से बाहर अपनी तलवार निकालकर कहा 'यह शत्रु का खून पीयेगी और म्यान में नहीं जायेगी।' इस वीर योद्धा धूला के भाषण से पंचायती सेना दल में जोश एवं साहस की लहर दौड़ गई और सबने जोर-जोर से मातृभूमि के नारे लगाये।

दूसरा उपप्रधान सेनापति हरबीर सिंह जाट था जिसका गोत्र गुलिया था। यह हरियाणा के जिला रोहतक गाँव बादली का रहने

वाला था। इसकी आयु 22 वर्ष की थी और इसका वजन 56 धड़ी (7 मन) था। यह नीडर एवं शक्तिशाली वीर योद्धा था।

सेनापतियों का निर्वाचन: उनके नाम इस प्रकार हैं -

- (1) गजेसिंह जाट गठवाला
- (2) तुहीराम राजपूत
- (3) मेदा रवा
- (4) सरजू ब्राह्मण
- (5) उमरा तगा (त्यागी)
- (6) दुर्जनपाल अहीर।

जो उपसेनापति चुने गये :-

- (1) कुन्दन जाट
- (2) धारी गडरिया (जो धाड़ी था)
- (3) भौन्दू सैनी
- (4) हुल्ला नाई
- (5) भाना जुलाहा (हरिजन)
- (6) अमनसिंह पुंडीर राजपुत्र
- (7) नत्थू पार्डर राजपुत्र
- (8) दुल्ला (धाड़ी) जाट
- (9) मामचन्द गुर्जर
- (10) फलवा कहार।

सहायक सेनापति : भिन्न-भिन्न जातियों के 20 सहायक सेनापति चुने गये।

वीर कवि : प्रचण्ड विद्वान् चन्द्रदत्त भट्ट (भाट) को वीर कवि नियुक्त किया गया जिसने तैमूर के साथ युद्धों की घटनाओं का आंखों देखा इतिहास लिखा था।

प्रधान सेनापति जोगराज सिंह गुर्जर के ओजस्वी भाषण के कुछ अंश- 'वीरो! भगवान् कृष्ण ने गीता में अर्जुन को जो उपदेश दिया था उस पर अमल करो। हमारे लिए स्वर्ग (मोक्ष) का द्वार खुला है। ऋषि-मुनि योग साधना से जो मोक्ष पद प्राप्त करते हैं, उसी पद को वीर योद्धा रणभूमि में बलिदान देकर प्राप्त कर लेता है। भारत माता की रक्षा हेतु तैयार हो जाओ। देश को बचाओ अथवा बलिदान हो जाओ, संसार तुम्हारा यशोगान करेगा। आपने मुझे नेता चुना है, प्राण रहते-रहते पग पीछे नहीं हटाऊंगा। पंचायत को प्रणाम करता हूँ तथा प्रतिज्ञा करता हूँ कि अन्तिम श्वास तक भारत भूमि की रक्षा करूंगा। हमारा देश तैमूर के आक्रमणों तथा अत्याचारों से तिलमिला उठा है। वीरों! उठो, अब देर मत करो। शत्रु सेना से युद्ध करके देश से बाहर निकाल दो।'

यह भाषण सुनकर वीरता की लहर दौड़ गई। लगभग 80,000 वीरों तथा 40,000 वीरांगनाओं ने अपनी तलवारों को चूमकर प्रण किया कि हे सेनापति! हम प्राण रहते-रहते आपकी आज्ञाओं का पालन करके देश रक्षा हेतु बलिदान हो जायेंगे।

मेरठ युद्ध : तैमूर ने अपनी बड़ी संख्यक एवं शक्तिशाली

सेना, जिसके पास आधुनिक शस्त्र थे, के साथ दिल्ली से मेरठ की ओर कूच किया। इस क्षेत्र में तैमूरी सेना को पंचायती सेना ने दम नहीं लेने दिया। दिन भर युद्ध होते रहते थे। रात्रि को जहां तैमूरी सेना ठहरती थी वहीं पर पंचायती सेना धावा बोलकर उनको उखाड़ देती थी। वीर देवियां अपने सैनिकों को खाद्य सामग्री एवं युद्ध सामग्री बड़े उत्साह से स्थान-स्थान पर पहुंचाती थीं। शत्रु की रसद को ये वीरांगनाएं छापा मारकर लूटती थीं। आपसी मिलाप रखवाने तथा सूचना पहुंचाने के लिए 500 घुड़सवार अपने कर्तव्य का पालन करते थे। रसद न पहुंचने से तैमूरी सेना भूखी मरने लगी। उसके मार्ग में जो गांव आता उसी को नष्ट करती जाती थी। तंग आकर तैमूर हरिद्वार की ओर बढ़ा।

हरिद्वार युद्ध : मेरठ से आगे मुजफ्फरनगर तथा सहारनपुर तक पंचायती सेनाओं ने तैमूरी सेना से भयंकर युद्ध किए तथा इस क्षेत्र में तैमूरी सेना के पांव न जमने दिये। प्रधान एवं उपप्रधान और प्रत्येक सेनापति अपनी सेना का सुचारू रूप से संचालन करते रहे। हरिद्वार से 5 कोस दक्षिण में तुगलुकपुर-पथरीगढ़ में तैमूरी सेना पहुंच गई। इस क्षेत्र में पंचायती सेना ने तैमूरी सेना के साथ तीन घमासान युद्ध किए।

उप-प्रधान सेनापति हरबीरसिंह गुलिया ने अपने पंचायती सेना के 25,000 वीर योद्धा सैनिकों के साथ तैमूर के घुड़सवारों के बड़े दल पर भयंकर धावा बोल दिया जहां पर तीरों तथा भालों से घमासान युद्ध हुआ। इसी घुड़सवार सेना में तैमूर भी था। हरबीरसिंह गुलिया ने आगे बढ़कर शेर की तरह दहाड़ कर तैमूर की छाती में भाला मारा जिससे वह घोड़े से नीचे गिरने ही वाला था कि उसके एक सरदार खिजर ने उसे सम्भालकर घोड़े से अलग कर लिया। (तैमूर इसी भाले के घाव से ही अपने देश समरकन्द में पहुंचकर मर गया)। वीर योद्धा हरबीर सिंह गुलिया पर शत्रु के 60 भाले तथा तलवारें एकदम टूट पड़ीं जिनकी मार से यह योद्धा अचेत होकर भूमि पर गिर पड़ा।

(1) उसी समय प्रधान सेनापति जोगराजसिंह गुर्जर ने अपने 22000 मल्ल योद्धाओं के साथ शत्रु की सेना पर धावा बोलकर उनके 5000 घुड़सवारों को काट डाला। जोगराजसिंह ने स्वयं अपने हाथों से अचेत हरबीरसिंह को उठाकर यथास्थान पहुंचाया। परन्तु कुछ घण्टे बाद यह वीर योद्धा वीरगति को प्राप्त हो गया। जोगराजसिंह को इस योद्धा की वीरगति से बड़ा धक्का लगा।

(2) हरिद्वार के जंगलों में तैमूरी सेना के 2805 सैनिकों के रक्षादल पर भंगी कुल के उपप्रधान सेनापति धूला धाड़ी वीर योद्धा ने अपने 190 सैनिकों के साथ धावा बोल दिया। शत्रु के काफी सैनिकों को मारकर ये सभी 190 सैनिक एवं धूला धाड़ी अपने देश की रक्षा हेतु वीरगति को प्राप्त हो गये।

(3) तीसरे युद्ध में प्रधान सेनापति जोगराजसिंह ने अपने वीर

आत्स्य से बचें क्योंकि आत्मा के प्रमाद से बेह सड़ने लगती है।

योद्धाओं के साथ तैमूरी सेना पर भयंकर धावा करके उसे अम्बाला की ओर भागने पर मजबूर कर दिया। इस युद्ध में वीर योद्धा जोगराजसिंह को 45 घाव आये परन्तु वह वीर होश में रहा। पंचायती सेना के वीर सैनिकों ने तैमूर एवं उसके सैनिकों को हरिद्वार के पवित्र गंगा घाट (हर की पौड़ी) तक नहीं जाने दिया। तैमूर हरिद्वार से पहाड़ी क्षेत्र के रास्ते अम्बाला की ओर भागा। उस भागती हुई तैमूरी सेना का पंचायती वीर सैनिकों ने अम्बाला तक पीछा करके उसे अपने देश हरियाणा से बाहर खदेड़ दिया। वीर सेनापति दुर्जनपाल अहीर मेरठ युद्ध में अपने 200 वीर सैनिकों के साथ दिल्ली दरवाजे के निकट स्वर्ग लोक को प्राप्त हुये।

इन युद्धों में बीच-बीच में घायल होने एवं मरने वाले सेनापति बदलते रहे थे। कच्छवाहे गोत्र के एक वीर राजपूत ने उपप्रधान सेनापति का पद सम्भाला था। तंवर गोत्र के एक जाट योद्धा ने प्रधान सेनापति के पद को सम्भाला था। एक रवा तथा सैनी वीर ने सेनापति पद सम्भाले थे। इस युद्ध में केवल 5 सेनापति बचे थे तथा अन्य सब देशरक्षा के लिए वीरगति को प्राप्त हुए।

इन युद्धों में तैमूर के द्वाइं लाख सैनिकों में से हमारे वीर योद्धाओं ने 1,60,000 को मौत के घाट उतार दिया था और तैमूर की आशाओं पर पानी फेर दिया। हमारी पंचायती सेना के वीर एवं

वीरांगनाएं 35,000, देश के लिये वीरगति को प्राप्त हुए थे।

प्रधान सेनापति की वीरगति

वीर योद्धा प्रधान सेनापति जोगराज सिंह गुर्जर युद्ध के पश्चात् ऋषिकेश के जंगल में स्वर्गवासी हुए थे।

ध्यान दीजिये! एक सवर्ण सेना का उपसेनापति वाल्मीकि था। अहीर, गुर्जर से लेकर 36 बिरादरी उसके महत्त्वपूर्ण अंग थे। तैमूर को हराने वाली सेना को हराने वाले कौन थे? क्या वे जाट थे? क्या वे राजपूत थे? क्या वे अहीर थे? क्या वे गुर्जर थे? क्या वे बनिए थे? क्या वे भंगी या वाल्मीकि थे? क्या वे जातिवादी थे? नहीं, वे सबसे पहले देशभक्त थे। धर्मरक्षक थे। श्रीराम और श्रीकृष्ण की संतान थे? गौ, वेद, जनेऊ और यज्ञ के रक्षक थे।

आज भी हमारा देश उसी संकट में आ खड़ा हुआ है। आज भी विधर्मी हमारी जड़ों को काट रहे हैं। आज हमें फिर से जातिवाद से ऊपर उठ कर एकजुट होकर अपने धर्म, अपनी संस्कृति और अपनी मातृभूमि की रक्षा का व्रत लेना होगा और यह तभी सम्भव है जब हम अपनी संकीर्ण मानसिकता से ऊपर उठकर सोचना आरम्भ करेंगे। आप में से कौन-कौन मेरे साथ है?

(सन्दर्भ-जाट वीरों का इतिहास,

दलीप सिंह अहलावत, पृष्ठान्त : 379-383)

आर्य भजनोपदेशक प्रशिक्षण केन्द्र, गुरुकुल कुरुक्षेत्र



'आर्य भजनोपदेशक प्रशिक्षण केन्द्र' का भव्य स्वरूप

गुरुकुल कुरुक्षेत्र में 'आर्य भजनोपदेशक प्रशिक्षण केन्द्र' की स्थापना की गई है। इस प्रशिक्षण केन्द्र पर विधिवत् प्रशिक्षण 01 अप्रैल 2017 से प्रारम्भ हो चुका है। जो भी प्रशिक्षण प्राप्त करने का इच्छुक व्यक्ति है उसके आवास, प्रशिक्षण एवं भोजन की व्यवस्था गुरुकुल की ओर से निःशुल्क रहेगी। प्रशिक्षण के बाद गुरुकुल के माध्यम से ही उचित मानदेय पर अपनी सेवा भी प्रदान कर सकेंगे। इच्छुक युवा व महानुभाव सम्पर्क करें :-

कुलवंत सिंह सैनी, प्रधान गुरुकुल कुरुक्षेत्र
मोबाइल - 9996026304

नन्दकिशोर आर्य,
मो-94664 36220, 86890 01220

गुरुकुल कार्यालय,
01744-238048, 238648

उदारता, निर्भयता और संयम

गरीबी में उदारता, संकट में निर्भयता (प्रपंच में शान्त), एकान्त में संयम । महापुरुष लोगों के लिए इस त्रिसूत्री कार्यक्रम का संकेत किया करते हैं। ये थोड़े-से शब्द इतने व्यावहारिक व अर्थगर्भित हैं कि यदि कोई इनकी साधना कर ले तो वह अपने जीवन को महान् सौभाग्य से भर सकता है। आइए! इन सटीक व सारभूत उपदेशों पर विचार करते हैं :-

गरीबी में उदारता : उदारता मानव हृदय की एक विशेष स्थिति है। हृदय जब संकोच भाव समाप्त होकर विशालता में परिवर्तित हो जाता है, तो उस अवस्था का नाम है - **उदारता**। हृदय इतना अधिक संकुचित हो सकता है कि उसमें किसी भी चीज को स्थान न मिले और इतना विशाल भी हो सकता है कि सबकुछ ही उसमें समा जाए। वैदिक ऋषि भी जब 'ओ३म् महः पुनातु हृदये' 'ओ३म् मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्' इत्यादि प्रार्थनाएं करते हैं तो उनका भाव अपने हृदय को विशाल बनाने का ही होता है।

समय, शक्ति, विद्या, बुद्धि, धन, ऐश्वर्य, भौतिक साधन, जमीन, जायदाद, समझ (ज्ञानशक्ति) इत्यादि व्यक्ति के पास जो कुछ भी शुभ होता है, वह उनके लिए होता है जिनको वह अपना समझता है। इस अपनेपन का जितना विस्तार होता जाता है, उसी अनुपात में हृदय की विशालता या उदारता बढ़ती जाती है। एक व्यक्ति का अपनापन अपने शरीर तक होता है, दूसरे का परिवार तक, तीसरे का गांव तक, चौथे का अपने इलाके तक, पांचवें का प्रान्त तक, छठे का देश तक, सातवें का विश्व तक। इनमें भी कुछ के प्रति अपनापन प्रधानरूप से होता है और शेष के प्रति गौणरूप से। जिसको प्रधानरूप से अपना मान लिया है उसके लिए तो सभी अपने-अपने स्तर पर त्याग कर रहे हैं - उनमें कुछ कहने, सुनने की बात ही नहीं है, परन्तु उदारता की आवश्यकता वहाँ पड़ती है, जब कोई अपरिचित भी सहयोगापेक्षी होता है। यह उदारता ही है जो व्यक्ति का नाम अपने 'स्व' से हटाकर 'पर' पर केन्द्रित कर देती है।

इस समस्त संसार को देखने से ऐसा लगता है कि तीन प्रकार के लोग हैं - एक वे हैं जो सारी सृष्टि को अपने सुख के लिए समझते हैं। दूसरे सारी सृष्टि के सुख के लिए अपने आपको समझते हैं और तीसरे, परस्पर के सुख के लिए यह सृष्टि है, ऐसा समझते हैं। पहली विचारधारा के लोग सर्वथा क्रूर, हृदयहीन, संकुचित, अनुदार हो जाते हैं। वे सृष्टि का उपयोग अपने सुख के लिए करते तो हैं पर वैसा चाहते हुए भी वे सुख ले नहीं सकते। वे मात्र अपने

अहं की तृप्ति, वह भी कुछ आंशिक रूप में ही कर सकते हैं। सुख उन लोगों के हिस्से में नहीं आता, क्योंकि सृष्टि-नियम ही कुछ ऐसे हैं - '**व्यक्ति जो कुछ दूसरों को देता है वही उसे मात्रा में कई गुणा बढ़कर वापस मिलता है।'**

जब व्यक्ति दूसरों के लिए अच्छा-बुरा कुछ कर रहा होता है तो मानो उस समय उन कर्मों के बीज बो रहा होता है जो बाद में फल के रूप में व्यक्ति को मिल जाते हैं। फल हमेशा अधिक ही होता है। बीज तो एक होता है, उस पर फल सैकड़ों लगते हैं। सो दूसरे को दुःख देने वालों को दुःख तथा सुख देने वालों को सुख और उसमें भी जिस तारतम्य भेद से वह दिया जा रहा है, उसी तारतम्य से प्राप्त होता रहता है।

दूसरे प्रकार के लोग जो पूर्णरूप से अपने आपको सृष्टि के सुख के लिए समझते हैं, वे अवश्य ही संख्या में इतने कम होते हैं कि उनकी गिनती अंगुलियों पर की जा सकती है परन्तु युगों-युगों तक वे ही अपने प्रकाश से सम्पूर्ण मानवता को आलोकित करते रहते हैं। सृष्टि के सूर्य, चन्द्र, वायु इत्यादि समस्त प्राकृत पदार्थ बिना भेदभाव के जैसे अपनी सेवायें अर्पित करते हैं, उसी प्रकार वे भी निष्पक्ष होकर अपने प्रेम व करुणा को निरन्तर प्राणिमात्र के ऊपर उड़लते रहते हैं। उनके लिए न कोई अपना होता है न कोई पराया। न कोई शत्रु न कोई मित्र, न कोई उपकारी न कोई अपकारी, न कोई भाई न कोई सखा, न कोई बड़ा न कोई छोटा, न कोई हीन न कोई महान्, न कोई उच्च न कोई नीच - सब प्राणियों में सम रूप से अवस्थित उस आत्म-तत्त्व को ही वे देखते रहते हैं, इसलिए वे भी सबके लिए सम हो जाते हैं और देश, काल, परिस्थिति के अनुसार जो उनके पास उत्तम से उत्तम ज्ञान, विद्या, धन, औषधि आदि होता है, उसकी समान रूप से अपने 'निकटवर्ती जीव जगत्' पर वृष्टि करते रहते हैं। यहाँ यह ध्यातव्य है जैसा कि कहा गया मनोवैज्ञानिक स्तर पर न कोई उनके निकट होता है न कोई दूर, इसलिए 'निकटवर्ती' शब्द उन लोगों की ओर संकेत मात्र है जो शरीर से उन महान् आत्माओं के समीप उनकी सेवायें लेने के लिए उपस्थित होते हैं। सचमुच ऐसे ज्ञानी पुरुषों का हृदय इतना विशाल होता है, जिससे बाहर कुछ भी शेष नहीं बचता। ये उदारता के मूर्त रूप ही होते हैं।

तीसरे प्रकार के लोग जो सृष्टि को परस्पर एक-दूसरे के सुख के लिए मानते हैं, वे दूसरों के जीवन व स्वतंत्रता में बाधक न बनते हुए उनसे सुख लेते हैं तथा बदले में जो उनके पास है उसे देते भी रहते हैं। इस मान्यता वाले लोगों के अनेक स्तर भेद होते हैं। कुछ

किसी के गुणों की प्रशंसा करने में समय मत खोओ, उसके गुणों को अपनाओ।

दूसरों से अधिक सुख लेना चाहते हैं और बदले में कम सुख देना चाहते हैं, दे पाते हैं या देते हैं। कुछ दूसरे ऐसे भी होते हैं जो दूसरों से कम से कम अपेक्षा रखते हैं और अधिक से अधिक सहयोग करना चाहते हैं।

सर्वत्र उदारता के मूल में प्रेम व करुणा का ही हाथ रहता है। जितना-जितना व्यक्ति में यह भाव बढ़ता जाता है, उतना-उतना उसका ध्यान अपने से हटने लगता है तथा दूसरे पर टिकने लगता है। जब व्यक्ति दूसरे को अपने से अधिक महत्वपूर्ण समझता है, तो दूसरे की दुःख या दूसरे की आवश्यकता पर तत्काल ध्यान जाता है और उस अवस्था में जो उसके पास है उसी से उसकी सेवा करना चाहता है किसी के पास लाखों रुपये हैं, वह उनमें से सौ, दो सौ रुपये किसी को दे देता है। दूसरे के पास सौ, दो सौ ही है और वे ही अर्पित कर देता है तो यही है 'गरीबी में उदारता'।

एक और उदाहरण लीजिए :- एक भिखारी कटोरा लिये भीख मांग रहा है। राजा का उधर से गुजरना हुआ कि राजा ने उसके कटोरे में चार आना डाल दिये। इतने में एक कोई दूसरा भिखारी आ निकला और उसने उस भिखारी के सामने हाथ फैला दिया। भिखारी ने कटोरे सहित चार आने उसको दे दिये। यह है गरीबी में उदारता। राजा ने तो चार आने दिये, इसने चार आने भी दे दिये और कटोरा भी दे दिया।

महाभारत में इसका तेजस्वी उदाहरण मिलता है जबकि कई दिन बाद एक ब्राह्मण परिवार को भोजन मिला। अकस्मात् उसी समय एक भूखे व्यक्ति का आना हो गया। उस ब्राह्मण परिवार के चार सदस्य थे, सबने अपना-अपना हिस्सा बारी-बारी करके भूखे अतिथि को प्रसन्नतापूर्वक खिला दिया। बोझ मानते हुए या दुःखी होते हुए नहीं बल्कि आनन्द के साथ। वस्तुतः यह हृदय का एक महान् सदगुण है। कोमलता की पराकाष्ठा है। ऐसा हृदय अहित व दुरित से स्वतः ही निवृत्त हो जाता है, क्योंकि अहित करने के लिए हृदय का कठोर होना आवश्यक है। कोमल हृदय का तो भला करना स्वभाव ही हो जाता है।

संकट में निर्भयता : संकट में आत्मनिष्ठ, प्रपंच में पूर्णप्रज्ञ प्रशान्त, प्रतिकूलताओं में समाहित, संकट में समाधिस्थ, संकट में निर्भयता, ये सभी शब्द मूलरूप से एक ही अर्थ को प्रकट कर रहे हैं कि जिस प्रकार अनुकूलताओं में व्यक्ति का मन शान्त व समाहित होता है, उसी प्रकार प्रतिकूलता में भी रह सके तो समझना चाहिए कि जीवन यात्रा की दिशा ठीक है। संकट, प्रतिकूलता और प्रपंच व्यक्ति के लिए परीक्षा की घड़ी होते हैं। उस अवस्था में ही व्यक्ति की साधना का निश्चय होता है कि वह कहाँ खड़ा है? कितनी प्रगति हुई है?

कहा जाता है आचरण के क्षेत्र में शत-प्रतिशत अंक लेने पर ही उत्तीर्णता मानी जाती है। सो यहाँ पर या तो व्यक्ति उत्तीर्ण होता है या अनुत्तीर्ण। बीच की और कोई सीमा रेखा नहीं है। संकट के समय यदि व्यक्ति का चित्त थोड़ा-सा भी डाँवाडोल हो जाता है तो यही समझना चाहिए कि वह असफल हो गया।

अनुकूल समय तो किसी साधक के लिए वैसा ही होता है जैसा कोई परीक्षार्थी या कोई मल्ल अपनी तैयारी कर रहा होता है। यह कहना अनावश्यक है कि तैयारी जितनी अच्छी होगी, परीक्षा देने में सुविधा उतनी अधिक होगी। एक मल्ल बिना ही व्यायामादि और स्वास्थ्य के नियमों का आचरण किये, यदि अखाड़े में उतर पड़ता है तो विजय के लिए क्या आशा की जा सकती है? मन को लक्ष्य करके ही सजगता व शान्त ध्यान आदि साधनों के द्वारा व्यक्ति को अपनी सत्ता की गहराई में बार-बार उतरना होता है। विषम परिस्थितियों के उपस्थित होने पर मन को कैसे शान्त रखा जाता है, यह इस विद्या को अधिगत करने पर ही आशा की जा सकती है कि व्यक्ति संकट के समय भी निर्भय बना रहे। जैसे दूध दूहने की या नदी में तैरने की एक कला होती है। जो लोग इन कलाओं में पारंगत हो जाते हैं उन्हें इन कामों को करने में कोई कठिनाई नहीं होती। बाकी लोगों के लिए इस प्रकार के सरल कार्य भी असम्भव जैसे प्रतीत होते हैं। सतत् व्यायाम के अभ्यास के द्वारा जैसे व्यक्ति अपनी क्षमताओं को धीरे-धीरे बढ़ाता चला जाता है, मांसपेशियाँ सर्वथा उसके अनुकूल हो जाती हैं। उसी प्रकार मन को भी प्रशिक्षित किया जाता है। नट लोग एक पतले तार पर चलने जैसा कठिन कार्य अभ्यास बल से ही कर पाते हैं। आचरण के क्षेत्र में भी अभ्यास का यही महत्त्व है। महापुरुष कहते हैं कि 'यदि अभ्यास अपूर्ण है तो कोई भी ऊँची से ऊँची जानकारी किसी समस्या के समाधान में कुछ भी मदद नहीं कर सकती और यदि अभ्यास पूर्ण है तो फिर तथ्यात्मक ज्ञान का वस्तुतः कोई अर्थ नहीं रह जाता।' वे कहते हैं - ज्ञान का अर्थ जानना नहीं, बल्कि वैसा हो जाना है। आवश्यक नहीं कि विचारों की भूल का तत्काल पता लग जाए, पर आचरण की भूल उसी समय प्रकट हो जाती है। इसलिए आचरण को भूल-रहित बनाने का एक अनन्य साधन है 'अभ्यास'। मन को शान्त स्थिति में बनाए रखने के लिए जो आन्तरिक प्रयत्न किया जाता है उसी का नाम है 'अभ्यास'। सत्य को बुद्धि के द्वारा समझ लेना कोई कठिन काम नहीं है, उस पर निरन्तर चलना या चलते रहना, यही आवश्यक, मुख्य व असाधारण कार्य है। इस विषय में कहा जाता है - 'अभ्यास के बिना सिद्धान्त एक विडम्बना है।' प्रायः व्यक्ति विभिन्न सिद्धान्तों को समझने में जितना व्यग्र रहता है, उतना उस जाने हुए सत्य का अभ्यास करने के लिए नहीं होता।

स्वार्थ के लिए प्रशंसा करना दाता के हाथ स्वाभिमान को बेच देना है।

मन को निरन्तर साधने का अभ्यास ही तो 'साधना' है, जिसके द्वारा प्रपंच में शान्त रहा जा सकता है। यही वह प्रमुख व अंतरंग साधन है जिसके बल पर आज तक ज्ञानी, सन्त, महात्मा, विप्र, ऋषि, महर्षि, योगी, तपस्वी जनों ने महान् पद को प्राप्त करके मनुष्य जीवन की उच्चतम सम्भावनाओं को चरितार्थ करके दिखाया है।

स्वाध्याय-सत्संग, उच्च-उद्देश्य, कार्मिक-व्यस्ततायें व्यक्ति की मदद तो करती हैं पर उस साधन की अपेक्षा ये सब बहिरंग ही हैं। इस प्रकार मन को साधने की विद्या में ही समस्याओं का अंतिम समाधान छिपा हुआ है। महापुरुष ऐसे सन्तों को अपनी प्रणामांजलि भेंट करते हुए कहा करते हैं - हम तो उन सन्तों के दास हैं जिन्होंने मन साध लिया। यों तो मन को साधने के लिए साधकों ने अपने-अपने ढंग से विभिन्न आविष्कार किये हैं, परन्तु **योग-सूत्रकार पतंजलि** ने दो प्रमुख साधनों का निर्देश किया है - या तो व्यक्ति नेति-नेति के द्वारा अपने आपको पहचाने कि मैं शरीर नहीं हूँ, मैं पंचभूत नहीं हूँ, मैं पंचतन्त्र मात्र नहीं हूँ, मैं इन्द्रियाँ नहीं हूँ, मैं मन भी नहीं हूँ और मन की वृत्तियाँ भी नहीं हूँ, मैं वह अहंकार भी नहीं हूँ जिसके द्वारा व्यक्ति अपने-आपको, मैं ऐसा हूँ, मैं वैसा हूँ। इस रूप में समझता है, इन सबका निषेध करने पर जो बचा रहता है- वह पूर्ण चिन्मय रूप ही मेरा सच्चा रूप है।

एक तो इस स्वरूप प्राप्तिरूप आश्रय के द्वारा व्यक्ति प्रकृति के सूक्ष्म व जटिल बन्धनों को तोड़ सकता है। बन्धनों के टूटते ही व्यक्ति अभय हो जाता है। जब तक व्यक्ति बन्धन में होता है, तभी तक किसी प्रकार का 'भय' उसका पीछा करता है। भय, बाधा, कठिनाइयाँ, अशान्ति, दुःख ये सब मन के बुद्धि के अविवेक की ही तो उपज हैं। सो मन व बुद्धि को ज्ञान से आलोकित रखने के लिए प्रकृति पुरुष विवेक एक उपाय है। या फिर दूसरा उपाय है मन को उच्चतर शक्ति के प्रतिपूर्ण समर्पित रखना, भक्ति से सदा ही लबालब भरे रहना, अपनी समस्त शारीरिक-वाचिक क्रियाओं, मन के विचारों व हार्दिक भावनाओं की उस परम शक्ति के प्रति आहूति देते रहना, इस भक्तिरूप उपाय से भी मन शान्त हो जाता है। सम्पूर्ण संसार भी यदि उसके विरोध में खड़ा हो जाए, तो भी वह अपने आपको पूर्ण सुरक्षित समझता है। कैसी भी विषम से विषम घटनाओं व परिस्थितियों का भी वह हंसते-हंसते स्वागत करता है। घोर अपमान, तिरस्कार, व घृणा से सर्वथा अलिप्त रहता है। किसी के द्वारा उस पर क्रोध की दनादन वर्षा किये जाने पर कछुए की भांति अपने आपको अन्दर खींच लेता है। विरोधियों के द्वारा कष्ट पहुंचाए जाने पर भी कभी भी प्रतिहिंसा व प्रतिशोध का भाव नहीं

लाता। चारों तरफ शोक व मोह का सागर उमड़ पड़ने पर भी ऐसी मुक्ति प्राप्त कर लेता है कि उस शोक सागर या मोह सागर में अपने आपको डूबने नहीं देता।

स्वामी दयानन्द ने भी अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' में निज अनुभव बल से उपासक की महती उपलब्धि का इन्हीं शब्दों में वर्णन किया है कि 'कष्टों का साक्षात् पहाड़ टूट पड़ने पर भी वह शान्ति से सह सकने में समर्थ हो जाता है।' वस्तुतः केवल एतद्विषयक संकल्प मात्र कर लेने से अथवा किसी महापुरुष का प्रवचन सुन लेने से या ऊंचे से ऊंचे शास्त्रों का अध्ययन-मनन कर लेने मात्र से प्रतिकूलताओं में प्रशान्त नहीं रहा जा सकता। इसके लिए मन का सतत् जागरूक रहना परम आवश्यक है।

एकान्त में संयम : व्यक्ति समूह में जो आचरण करता है, उसमें मान-सम्मान का भाव बीच में आ जाने के कारण बाह्य दिखावा अधिक विद्यमान रहता है। अन्दर से व्यक्ति चाहे संयमी न भी रहे, पर बाहर से संयम का प्रदर्शन करना होता है। कारण ? समाज के द्वारा दण्डित होने का भय व पुरस्कार का प्रलोभन बराबर ही उसके समक्ष बना रहता है। अन्दर-अन्दर कोई भी कामना अपनी जड़ जमाए रहती है, प्रलोभन व्यक्ति को खींचता रहता है, पर सामाजिक भय के कारण व्यक्ति शरीरतः वैसा कर नहीं सकता और इसलिए बाह्य दिखावा मात्र करता रहता है अर्थात् उस अवसर पर व्यक्ति का मन तो असंयमी हो जाता है, पर शरीर को व्यक्ति जैसे-तैसे वैसा करने से रोके रखता है। यदि व्यक्ति का मन संयमी है तो ही समझना चाहिए कि व्यक्ति संयमी है।

व्यक्ति के मन के संयम : असंयम की परीक्षा तब होती है, जब उसे किसी प्रकार का बाह्य भय नहीं होता। सर्वथा एकान्त निर्जन स्थान में भी किसी को यौवन का सौन्दर्य किञ्चित् भी आकृष्ट न कर सके फिर कहीं इसी प्रकार प्राप्त हुए सोने का आकर्षण उसे लुभान सके तो समझना चाहिए कि अमुक व्यक्ति ने अपने मन पर संयम कर लिया है। कहने का भाव यह है कि व्यक्ति बुराई से या तो आन्तरिक धर्मनिष्ठा और ईश्वर विश्वास के द्वारा रुकता है, अथवा बाह्य सामाजिक मर्यादाओं के द्वारा अर्थात् किसी बाह्य भय के द्वारा। एकान्त में संयमी वे ही हो सकते हैं जिनका अपनी अन्तःसत्ता में पूर्ण विश्वास हो। अपनी अन्तरात्मा में जिन्होंने सत्य-असत्य को पहचान लिया हो। वस्तुतः इस स्थिति को प्राप्त हुआ व्यक्ति सर्वथा सर्वदा निर्भय हो जाता है। सरलार्थ यह है - **एकान्त में संयमी होना देवत्व है।** बाह्य भयवश अपने आपको किसी बुराई से बचाना सामान्य मनुष्यत्व है किन्तु साधक का तो लक्ष्य यही है कि मनुष्यत्व से देवत्व की ओर सतत् आरोहण करता रहे।

वेदा वदन्ति

एकान्त ज्ञान ध्यान, उपासना :-

स इद्वने नमस्युभिर्वचस्यते ।

(ऋग्वेद, 1.55.4)

भक्त लोग वन में ही भगवान का भजन करना चाहते हैं ।

**Devotees want to meditate in the forests
(in serene place)**

यथा पिंडे तथा ब्रह्मांडे : जैसा लोक में, संसार में होता है, वही ब्रह्मांड में देखा जाता है। हम जब अपने आत्मीय जन को फोन करना चाहते हैं तो जहाँ हम लोगों में बैठे होते हैं ,वहाँ से उठ कर थोड़ा दूर एकान्त में चले जाते हैं ताकि हम निश्चिन्त होकर निर्बाध होकर बात को सुन सकें, कम सुनने वाले तो ऐसा करते ही हैं परन्तु सही सुनने वाले भी एकान्तप्रिय होते हैं ।

एक तो ध्यान देने से एक-दूसरे की बात को शीघ्र श्रवण कर सकते हैं, मनन कर सकते हैं, निदिध्यासन, ध्यान कर सकते हैं ।

दूसरा षट्कर्णों भिद्यते मन्त्रः छह कानों में, तीन मनुष्यों में गई हुई बात लीक हो जाती है, अन्यत्र जा सकती है, परन्तु चतुष्कर्णों स्थिरीभवेत्, चार कानों में पड़ी हुई दो मनुष्यों की बात सुरक्षित हो जाती है। बात जितनी गम्भीर होती है उसको वैसा ही वातावरण दिया जाता है। ठीक यही स्थिति परमेश्वर के सम्बन्ध में हम सोच सकते हैं। वेद ने कहा है :-

स इद्वने नमस्युभिर्वचस्यते

भक्त लोग वन में, शान्त स्थान पर, अनुकूल वातावरण में परमेश्वर

विद्यालय हेतु प्रार्थना ईश्वर-स्तुति

सुबह सवेरे लेकर तेरा नाम प्रभु ।

करते हैं हम शुरु आज का काम प्रभु ।।

शुद्ध भाव से तेरा ध्यान लगायें हम ।

विद्या का वरदान तुम्हीं से पायें हम ।।

तुम्हीं से है आगाज तुम्हीं अंजाम प्रभु ।

करते हैं हम शुरु आज का काम प्रभु ।।

गुरुओं का सत्कार कभी ना भूलें हम ।

इतना बनें महान् गगन को छूलें हम ।।

तुम्हीं से है सुबह, तुम्हीं से शाम प्रभु ।।

करते हैं हम शुरु आज का काम प्रभु ।।

की बात सुनना तथा अपनी सुनाना चाहते हैं ,क्यों कि अपने जैसों के साथ ही बातचीत हो सकती है। एकान्त में ही अन्तर्यामीभगवान का उपदेश सुनाई देता है, भीड़-भड़कके में रहने से वृत्ति बहिर्मुख हो जाती है। सत्संगों में, मन्दिरों में, आश्रमों में कोई भी श्री देवी, हेमा मालिनी, शाहरुख खान, ऋषि कपूर की चर्चा नहीं करता क्योंकि अपनी-अपनी संगति, अपना-अपना परिवेश, अपने-अपने मित्र ही चर्चा के लिये अभीष्ट होते हैं। कहा भी है :-

मृगाः मृगैः संगमनुव्रजन्ति, गावश्चगोभिस्तुरगास्तुरगैः ।

अर्थात् मृग मृगों के साथ बैठते हैं, गौ गौओं के साथ तथा घोड़े घोड़ों के साथ। बहुत बड़े झुंड में भी बछड़ा अपनी माँ को ढूँढ ही लेता है। ऊपर की ओर फेंका हुआ मिट्टी का ढेला पृथ्वी पर ही आकर गिरता है, समानता के कारण से। अग्नि की ज्वाला नीचे न आकर ऊपर को ही जाती है, सूर्य से आन्तर्य, समानता होने के कारण से। ऐसे ही समानधर्मा आत्मा को परमात्मा ही चाहिये वार्तालाप करने के लिये, और वह भी नीरव, शान्त, और एकान्त स्थान पर। जहाँ दोनों मिल सकें, बात कर सकें। अध्यात्म विद्या का ग्रहण, चिन्तन-मनन, अध्यात्म विद्या को जानने वालों के, सिखाने वालों के साथ ही संलाप से, परस्पर वार्तालाप से हो सकता है। अनिच्छुकों से, नास्तिकों से, रुचि न रखने वालों से संवाद करने का क्या लाभ, जिन तिलों में तेल ही नहीं। यही बात न्यायदर्शन में कही है :-

ज्ञानग्रहणाभ्यासस्तद्विधैश्च सह संवादः ।

जो भगवान की तन्मयता से कामना करता है भगवान भी उसका - वृषा छन्दुर्भवति हर्यतः सुखवर्षक, सुख बरसाने वाला होकर उसकी रक्षा करता है। एक स्थान पर आता है :-

मा जरितुः काममूनयीः

वह भक्त की कामना को अधूरी नहीं रहने देता - ऊन - कोई कमी नहीं छोड़ता। जब साधक कल्याण मार्ग पर चलता है, सुकर्मा बनता है, ईश्वरीय सृष्टि को आत्मवत् व्यवहार करता है, त्यागी बन कर उपभोग करता है, निरभिमानिता से उसकी सत्ता, महत्ता, सामर्थ्य, शक्ति बल, पराक्रम को स्वीकार करता है तो परम पिता परमात्मा उसके उत्थान का, कल्याण का भार अपने ऊपर ले लेता है, वह तो शक्ति के कारण, देवों, दानवों, अलौकिक गुण वालों से बढ़ कर जाना जाता है इसलिए जहान से महान उस दिव्य तेजस्वी शक्ति पर हम श्रद्धा करें और एकान्त में जाकर उस की स्तुति द्वारा ज्ञान बल पराक्रम को प्राप्त कर अपनी आन्तरिक समस्याओं का हर सम्भव समाधान करें।

ब्रह्मचर्यमय जीवन परम पुरुषार्थमय जीवन है।

जल चिकित्सा : पानी से उपचार

आयुर्वेद में जल (पानी) की कई रोगों के इलाज में उपयोगिता बतायी गई है जो दुनिया भर में जल चिकित्सा के नाम से प्रचलित है। विदेशों में जल चिकित्सा को 'हाइड्रोपैथी' के नाम से जाना जाता है। जर्मनी के महान आचार्य सरलुईकूने ने जल के विभिन्न प्रयोगों द्वारा कई रोगों को सफलतापूर्वक दूर किया। आयुर्वेद और यूनानी चिकित्सा पद्धतियों में इसकी काफी महत्ता बताई गई है। अब तो इसे एक वैकल्पिक चिकित्सा पद्धति के रूप में भी अपनाया जा रहा है। जापान में जल चिकित्सा पद्धति काफी लोकप्रिय है तथा अनेक रोगों का उपचार इससे किया जा रहा है। भारत में भी फिर से यह पद्धति धीरे-धीरे लोकप्रिय हो रही है।

पंचतत्त्वों से बने शरीर को पानी की सबसे ज्यादा जरूरत पड़ती है। शरीर का तीन-चौथाई भाग पानी है। पानी हमारे सब प्रकार के आहारों जैसे फल, सब्जी, दूध में सम्मिलित रहता है, फिर भी हमें अपने शरीर के बेहतर स्वस्थ के लिए अतिरिक्त पानी की आवश्यकता होती है। पानी पीने से न केवल हमारे आंतरिक अवयव स्वच्छ रहते हैं। बल्कि उनमें ताजगी भी बनी रहती है।

पानी के गुणों और अवगुणों का संबंध उसके स्रोत पर निर्भर करता है। जैसे झरने का जल कफनाशक, हल्का और दिल को ताकत देने वाला होता है। ओस का पानी प्रकृति से ठंडा तथा रूखा होता है। बर्फ का पानी ठंडा, भारी तथा पित्त रोगों में लाभदायक होता है। सरोवर का जल मीठा, बलदायक तथा प्यास को बुझाता है, लेकिन तालतलैया का पानी हर प्रकार से हानिकारक होता है। इसी प्रकार दिन भर सूर्य की किरणों से तपा हुआ तथा रात में चंद्रमा की किरणों से युक्त पानी (जल) ठंडा, हल्का, दोषनाशक, बलदायक, बुद्धिवर्धक अर्थात् अमृत के समान होता है। जल चिकित्सा बेहद असरदार होती है, साथ ही इसकी एक खास बात है कि इसका शरीर पर कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ता है। जल चिकित्सा में पानी के सफल प्रयोग से कई बीमारियाँ ठीक होती हैं। यहाँ पर कुछ आम बीमारियों और उनके जल चिकित्सा के द्वारा उपचार के नुस्खे बताए जा रहे हैं। उम्मीद है कि आपको इससे जरूर लाभ मिलेगा।

जल चिकित्सा से ऐसे करें बीमारियों को दूर

जल चिकित्सा की कई विधियाँ हैं। ठंडे पानी की पट्टी, गर्म पानी की पट्टी, जल धौंती, एनिमा, वाष्प स्नान, कटि स्नान, टब स्नान, बर्फ आदि विधियों से विभिन्न रोगों में लाभ होता है।

1. दर्द (सूजन) फोड़े-फुंसी, गर्म-ठंडे पानी से सेकने पर ठीक हो जाते हैं। पहले तीन मिनट गर्म पानी की सेंक करें। फिर एक मिनट ठंडे पानी की। इस प्रकार दस मिनट तक सुबह-शाम दो बार सेंकने से जरूर लाभ मिलता है।

2. जब तनाव की स्थिति से गुजर रहे हों तो एक गिलास ठंडा पानी पिएँ। यह आपकी एनर्जी को बढ़ाता है। जल चिकित्सा में तनाव को भाप स्नान से दूर किया जा सकता है। घर पर वाष्प स्नान लेने के लिए एक कुर्सी पर रोगी को बैठा दें।

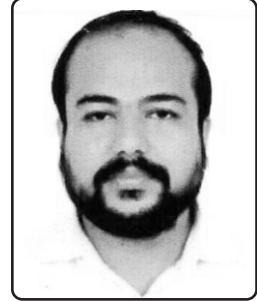
उसको कंबल से चारों तरफ से ढक दें। दूर गैस चूल्हे पर एक कुकर पानी भरकर रखें। सीटी को हटाकर एक लंबी पाइप लगा दें। पाइप के एक सिरे को सावधानीपूर्वक रोगी की कुर्सी के नीचे रख दें। इससे पहले रोगी को एक गिलास पानी पिलाएँ और सिर पर ठंडे पानी से भीगा तौलिया रखें। भाप स्नान से त्वचा का मैल निकल जाता है। शरीर के रोमछिद्र खुल जाते हैं। शरीर में हल्कापन आता है। त्वचा निखरती है। तनाव कम हो जाता है। भाप स्नान से कमर दर्द में भी फायदा मिलता है। **सावधानियाँ** : उच्च रक्तचाप की तकलीफ है तो भाप स्नान न करें। अगर गर्मी सहन न हो तो उपचार तुरंत रोक दें।

3. पेट में यदि दर्द हो रहा हो तो गर्म पानी की पट्टी या रबर की बोतल में गर्म पानी भर उसका सेंक करने से पेट दर्द दूर हो जाता है। अकसर पेट-दर्द गलत खान-पान से होता है जिससे पेट में गैस बनती है और गैस मरोड़ पैदा करती है। इसके लिए एनिमा लेना भी लाभप्रद है। एनिमा से पेट का जमा हुआ मल या गैस आदि बाहर निकल जाते हैं।

4. पैरों में पसीना आने की बीमारी हो, तो पहले गर्म पानी में और फिर ठंडे पानी में क्रमशः पांच-पांच मिनट पैर रखने चाहिए। फिर बाद में रगड़कर पोंछ लें और यह प्रयोग कम से कम हफ्ते भर करें। जल चिकित्सा के इस उपाय से अन्य शारीरिक विकारों को भी दूर किया जा सकता है।

5. **पाचन क्रिया** दुरुस्त रखने के लिए जल चिकित्सा : इसके लिए कमर स्नान काफी फायदेमंद होता है। बड़े टब में पानी भरें। रोगी को टब में कपड़े उतारकर इस तरह बैठा दें कि उसकी नाभि तक पानी आ जाए। रोगी के पैर बाहर एक मेज पर रख दें। रोगी के सिर पर एक गीला तौलिया रख दें तथा रोगी को एक सूती कपड़ा देकर नाभि के चारों तरफ रगड़ने को कहें। यह जल चिकित्सा 20 से 30 मिनट तक दें। इससे कब्ज में लाभ मिलता है और पाचन क्रिया ठीक हो जाती है।

6. **दमा** के दौरे में हाथ-पैर गर्म पानी में डुबोएं और रात में सोने से पूर्व गर्म पानी पिलाएं। दौरा पड़ने पर भी गर्म पानी ही



डॉ. सत्येन्द्र तिवारी

पिलाना लाभप्रद होता है।

7. गर्मी में ठंडे पानी से और सर्दी में गर्म पानी से पैर धोकर सोने से नींद अच्छी आती है।

8. ज्यादा चलने, ऊंचाई पर चढ़ने आदि से पैरों में आई थकान को दूर करने के लिए शाम को गर्म पानी में थोड़ा नमक डालकर पांच-दस मिनट डुबो कर रखें, सारी थकान दूर हो जाएगी।

9. पेट-दर्द की शिकायत में गर्म पानी की थैली से सिंकाई करें, इस जल चिकित्सा से आराम मिलेगा।

10. मसूढ़े फूलकर दर्द करते हों, तो गर्म पानी से कुल्ला करें। दांत दर्द में पहले दो मिनट सहनीय गर्म पानी मुंह में रखें, फिर बहुत ठंडा पानी दो मिनट रखें। इस क्रिया को चार-पांच बार दोहराने से दांत दर्द मिट जाएगा।

11. शरीर के किसी भी हिस्से के जल जाने पर तुरंत ही उस पर ठंडा पानी तब तक डालें, जब तक कि जलन समाप्त न हो जाए। बर्फ के पानी में जले हुए अंग को डुबा कर रखना और भी अधिक लाभदायक उपाय है। जल चिकित्सा के इस उपाय से न केवल शीघ्र आराम मिलेगा, बल्कि जले हुए का निशान भी नहीं पड़ेगा।

घाव, चोट पर जब तक दवा उपलब्ध न हो, ठंडे पानी की पट्टी रखें। उसे गीला करते रहें। दिन में दो-तीन बार पट्टी बदल कर दोहराते रहने से छोटे घाव यूं ही ठीक हो जाते हैं।

12. तेज बुखार में ठंडे पानी की पट्टियाँ माथे पर रखने और बार-बार भिगो कर बदलते रहें, शरीर का तापक्रम कम हो जाएगा।

13. पित्त ज्वर की जल चिकित्सा: पित्त बुखार में रोगी की नाभि पर ठंडे पानी की धार डालने से उसे प्रचुर लाभ मिलता है। पित्त ज्वर के रोगी को पीठ के बल लिटा देना चाहिए। फिर उसके पेड़ू पर तांबे या कांसे का बर्तन जो गहराई वाला हो, रखें और तब ठंडे पानी की धार उसमें गिराएं। यह विधि पित्त ज्वर में तुरन्त फायदा पहुंचाती है।

14. लू लगने पर जल चिकित्सा : जब मनुष्य को लू लगती है तो अधिक गर्मी सहन न कर सकने की दशा में वह बेहोश हो जाता है। ऐसे व्यक्ति को ठंडी और हवादार जगह में लिटाना चाहिए। खस या खजूर के पंखे को पानी में भिगोकर उससे हवा करनी चाहिए। चेहरे पर ठंडे पानी के छीटें मारें। रोगी के कपड़े उतार कर उसे ठंडे पानी से नहलाएं। चने के सूखे साग या चने के भूसे को पानी में भिगोकर कुछ देर बाद उस पानी में कपड़ा भिगोकर रोगी के शरीर पर मलें, यह बहुत ही लाभ पहुंचाता है।

15. गर्मी में या शरीर में किसी कारणवश गर्मी की अधिकता से कभी-कभी नाक से खून निकलना आरम्भ हो जाता है। इसे नकसीर फूटना भी कहते हैं। ऐसे में रोगी की नाक पर ठंडे पानी के छीटें मारने चाहिए। साथ ही सिर पर ठंडा पानी डालें और रोगी के

सिर पर ठंडे पानी की पट्टी रखें। कुछ ही देर में रोगी को आराम मिल जाएगा।

16. कमजोरी या किसी रोग के कारण या फिर खून की कमी की वजह से चक्कर आ जाते हैं। ऐसे में रोगी के मुंह पर ठंडे पानी के छीटें मारें तथा उसे हवादार स्थान पर लिटाएं या पंखे से उसकी हवा भी साथ-साथ करें। रोगी को ठंडी पानी पिलाते ही चक्कर आने बंद हो जाते हैं।

17. हैजे की जल चिकित्सा : हैजा एक संक्रामक रोग है। यह रोग आमतौर पर गंदा पानी पीने और सड़ी-गली और बासी खाद्य वस्तुएं खाने से होता है। इससे बचने के लिए कभी गंदा पानी न पिएं। खाने-पीने की वस्तुएं ढककर रखें। गले-सड़े फल-सब्जियां सेवन न करें। दूध उबालकर ही पिएं। हैजे में उल्टी और दस्त बहुत होते हैं। अतः उल्टी-दस्तों को रोकने वाली दवा न खाकर उल्टी-दस्त खुलकर होने दें, ताकि सारा विष पेट से निकल जाए। इसके लिए गर्म पानी में नमक डालकर वह पानी उसे पिलाएं और मरीज से उल्टी कराएं। इससे हैजे का सारा संक्रमण बाहर निकल जाएगा। इसके बाद रोगी को नींबू का पानी पिलाएं।

18. अनिद्रा या नींद न आने की स्थिति अधिकतर मानसिक कारणों से होती है। गलत खान-पान, चिंता, देर रात तक जागना, पेट में गैस हो, छाती में भारीपन, शरीर में दर्द हो, रात को अधिक चाय पीना, कॉफी का अधिक सेवन करने आदि से अनिद्रा की स्थिति बन जाती है। शहरी आबादी में यह रोग बहुतायत में पाया जाता है।

उपचार : सोने से पहले ठंडे जल से स्नान करें। नहाते समय सिर पर पानी की धार डालें। रात में हल्का भोजन लें।

19. पेट की गैस के उपचार के लिए जल चिकित्सा के उपाय : पेट की गैस को ठीक करने के लिए कुंजन क्रिया बड़ी ही कारगर साबित होती है। जब पित्त की मात्रा शरीर में अधिक हो जाए और अपचन की शिकायत हो तो रोगी को चाहिए कि वह अपने पेट को वमन (उलटी) द्वारा ठीक करे। इसके लिए सबसे पहले 5.6 गिलास पीने का पानी गरम करें। उसमें एक चम्मच नमक मिलाएँ। अब कागासन में बैठकर पानी पिएँ। इसके बाद 5 से 10 मिनट तक टहलें। फिर आगे की तरफ झुककर उलटी कर दें। इसे 'कुंजन क्रिया' कहते हैं। इससे गैस संबंधित रोग खत्म होता है। शरीर के अंदर की सफाई हो जाती है। इसके बाद आप काफी हल्का महसूस करेंगे। सावधानियाँ: उच्च रक्तचाप की समस्या वाले व्यक्ति डॉक्टर की सलाह से ही यह क्रिया करें।

20. मौसम बदलते ही सर्दी-जुकाम इससे निजात पाने के लिए जल चिकित्सा की 'जल नेति क्रिया' फायदेमंद होती है। एक लोटा लेकर उसमें हल्का गरम पानी और आधा चम्मच नमक

मिलाकर नाक में लगाएँ और मुँह को खोलकर साँस लें तथा दूसरी नाक से पानी को निकाल दें। जल नेति से सर्दी-जुकाम की समस्या से तो मुक्ति मिलती ही है, यह नेत्र ज्योति भी बढ़ाती है। समय से पहले बाल सफेद नहीं होते। सिरदर्द ठीक होता है।

21. एक लीटर पानी में 10-20 ग्राम जीरे का पाउडर मिलाकर गरम करें। जब पानी की मात्रा तीन-चौथाई बचे तब इसे ठंडा करके छान लें। इस जल को पीने से रक्त प्रदर (गर्भाशय के तमाम रोग) गर्भावस्था के दौरान होनेवाले रोग जैसे गर्भपात, वायु एवं पित्त रोगों में अत्यंत लाभ मिलता है। इसके अलावा हाथ-पैरों में जलन, श्वेत प्रदर, अनियमित मासिक स्राव तथा नेत्र रोगों में भी लाभ मिलता है।

जल चिकित्सा के अतिरिक्त पानी के बारे में

अन्य रोचक ज्ञानवर्धक तथ्य :-

शरीर में कितना पानी : हमारे शरीर के खून में 60 प्रतिशत तक, मस्तिष्क में 84 प्रतिशत, मांसपेशियों में 77 प्रतिशत, लीवर में 73 प्रतिशत, कार्टिलेज में 67 प्रतिशत, हड्डी में 22 प्रतिशत और वसा में 15 प्रतिशत पानी की मात्रा होती है। उसी प्रकार हमारे शरीर से प्रतिदिन प्रायः 3 लीटर पानी खर्च होता है। इस प्रकार शरीर से बाहर निकलने वाले पानी की कमी कुछ मात्रा में भोजन में रहने वाले पानी के द्वारा पूरी हो जाती है, फिर भी शरीर में पानी का संतुलन बनाए रखने के लिए ढाई से तीन लीटर, यानी 8 से 10 गिलास पानी 24 घंटे में जरूर पीना चाहिए जो मौसम और व्यक्ति के शरीर तथा दिनचर्या पर निर्भर करता है। जैसे कड़ी धूप में अधिक परिश्रम करने वाले व्यक्तियों को अन्य लोगों के मुकाबले अधिक पानी पीने

की जरूरत होती है।

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि मनुष्य बिना भोजन के 40 दिनों तक जीवित रह सकता है, लेकिन पानी के बिना 7 दिन से अधिक नहीं। यह हमारे शरीर में पाया जाने वाला सबसे महत्वपूर्ण तत्व है। औसतन एक वयस्क व्यक्ति के शरीर में 35 से 50 लीटर तक पानी रहता है, अर्थात् उसके स्वयं के भार का 60 से 75 प्रतिशत।

पानी का महत्त्व : जल चिकित्सा के सिद्धांत के अनुसार पानी शरीर में पहुंच कर शरीर को फुर्तीला बनाता है, शरीर की नमी का संतुलन बनाए रखते हुए उसकी अत्यधिक गर्मी को कम करता है। भोजन के आवश्यक पोषक तत्वों को घोल कर उन्हें शरीर द्वारा सोख लेने योग्य बनाता है। अनावश्यक शारीरिक पदार्थों को मल, मूत्र और पसीने के माध्यम से शरीर से बाहर निकाल कर शरीर का तापमान संतुलित बनाए रखता है। पानी से खून तरल बना रहता है, जिससे हर कोशिका तक पोषण तत्व बराबर पहुंचता रहता है। पानी की कमी से मल सूखा होने लगता है, कब्जियत हो जाती है। मूत्र पीला और जलन के साथ आने लगता है। उलटी, दस्त से जब शरीर में पानी की कमी हो जाती है, तो निर्जलन (डिहाइड्रेशन) के कारण व्यक्ति की मृत्यु भी हो सकती है।

जल चिकित्सा के सिद्धांत के अनुसार बुखार, लू लगने पर, और पेशाब संबंधी बीमारियां होने, रक्तचाप, हृदय की धड़कन, कब्ज, पेट की जलन जैसी तकलीफों में सामान्य स्थिति की अपेक्षा अधिक पानी पीना लाभदायक होता है। संकलन : डॉ. सत्येन्द्र तिवारी पंचकर्म एवं प्राकृतिक चिकित्सा विशेषज्ञ

“मानव संसाधन राज्यमंत्री डॉ. सत्यपाल आर्य का सत्य कथन”

विडम्बना है कि आज भी प्रायः भारतीय बुद्धिजीवी मैकाले के मानस-पुत्र बने हुए हैं। यही कारण है कि वैदिक विद्वान् एवं मनीषी, मानव संसाधन राज्यमंत्री डॉ. सत्यपाल सिंह आर्य ने जब डार्विन के सिद्धान्त को मिथ्या निरूपित किया तो ऐसे बुद्धिजीवी चीत्कार करने लगे क्योंकि इनके निकट केवल पाश्चात्य विद्वानों के कथन माननीय हैं, परन्तु ये भूल गये कि विदेशी वैज्ञानिकों ने भी डार्विन की थ्योरी को एक बार नहीं अनेक बार प्रश्नों के घेरे में खड़ा किया है। यहाँ तक कि एक पाश्चात्य दार्शनिक को एंटी डार्विन थ्योरी के लिए नोबल पुरस्कार भी मिल चुका है पर ये वहीं खड़े हैं क्योंकि इनकी नजरों में भारत में कुछ महत्वपूर्ण खोजा या कहा हो यह संभव ही नहीं है।

श्री वासुदेव देवनानी ने जब कहा कि गुरुत्वाकर्षण शक्ति की खोज का श्रेय न्यूटन को दिया जाता है जबकि उससे पूर्व भारत में यह तथ्य प्रतिपादित किया जा चुका था तो भारी हो हल्ला इन

तथाकथित बुद्धिजीवियों ने मचाया। हो-हल्ला तो मचाया परन्तु भास्कराचार्य का सिद्धान्त शिरोमणि उठाकर नहीं देखा। इनको तो शिवकर बापू तलपदे को हवाई जहाज के आविष्कारक के रूप में प्रस्तुत किया जाना भी नागवार गुजरेगा। कुछ दिनों पूर्व संसद में एक नेताजी द्वारा ब्यान दिया गया कि आर्य भारत में बाहर से आये, तब सीकर के सांसद एवं आर्य संन्यासी स्वामी सुमेधानन्द जी ने स्वामी विद्यानन्द जी की अप्रतिम पुस्तक ‘आर्यों का आदिदेश’ सभी सांसदों को वितरित कर, उन तक सत्य संप्रेषित करने का सराहनीय कार्य किया।

ऐसे वातावरण में आज के युवा को कैसे ज्ञात होगा कि उनके पूर्वजों ने संसार में अपने ज्ञान-विज्ञान का लोहा मनवाया था। डार्विन की परिकल्पना में तो इतने छेद हैं कि पानी की एक बूंद न ठहर सके। पाश्चात्य जगत् में ही अनेकों प्रबुद्धों ने डार्विन की परिकल्पना को असत्य सिद्ध किया है। साभार : सत्यार्थ सौरभ

सच्चा भक्त वह है जिसने जान लिया कि वह और जगदीश्वर भिन्न नहीं है।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र की मधुर स्मृतियाँ

प्रिय पाठकों, गुरुकुल के पूर्व छात्र जो अब समाज के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत हैं। गुरुकुल से शिक्षा प्राप्त कर वैदिक संस्कृति और वेदों का प्रचार-प्रसार कर समाज को नई दिशा दे रहे हैं, ऐसे महानुभावों हेतु 'गुरुकुल-दर्शन' द्वारा 'गुरुकुल कुरुक्षेत्र की मधुर स्मृतियाँ' नाम से यह स्तम्भ आरम्भ किया गया है। इसके अन्तर्गत गुरुकुल कुरुक्षेत्र के पूर्व छात्रों के अनुभव, अध्ययन के समय की मधुर स्मृतियों को प्रकाशित किया जाएगा। आशा करते हैं कि आपको यह स्तम्भ पसंद आएगा।

गतांक से आगे... मेरी एक आदत का उल्लेख करना छूट गया है। मुझे गुड़ खाना बहुत भाता था। कुरुक्षेत्र गुरुकुल के भण्डारी सूबेदार जी बड़े कृपालु थे। वे मांगने पर मुझे गुड़ मुफ्त में दे देते थे। प्रायः मेरी शर्ट की जेब में गुड़ की डली जरूर होती थी और मैं चलते-चलते ही गुड़ खाता रहता था। गुरुकुल कांगड़ी में भण्डारी जी मुफ्त में गुड़ नहीं देते थे। मैं जितना गुड़ लेता था, वे कॉपी में नोट कर लेते थे और गुड़ का वह खर्च प्रतिमास कार्यालय द्वारा मेरे घर सूचित किया जाता था। मेरे धर्म का भाई बाबू कुलकर्णी ने बताया कि 'गुरुकुल के आये पत्र में गुड़ का 15 रुपये का खर्च अलग से लिखा होता था।' अपनी इस आदत को मैं जीवन भर छोड़ नहीं पाया, आज भी मैं भोजन के बाद गुड़ अवश्य खाता हूँ।

प्रायः 'आदत' कहने से लोग उसे बुरी मान लेते हैं परन्तु मेरे लिए तो गुड़ खाने की आदत स्वास्थ्यवर्धक रही है, किन्तु गुड़ देशी, बिना केमिकल वाला होना चाहिए। आजकल केमिकल मिलाकर जो पीला-सफेद गुड़ बनाया जाता है, वह तो हमारे स्वास्थ्य के लिए निःसन्देह हानिकारक है।

पूर्व में जिन 'लालाजी' का जिक्र आया है, वे बहुत बुजुर्ग थे। बार-बार बीमार होते रहते थे और दवाखाने में भर्ती हो जाते थे। शंका होती थी कि अबकी बार लालाजी बचेंगे नहीं, किन्तु वे तन्दुरुस्त होकर लौट आते थे। जब ऐसा कई बार हुआ तो कुछ शरारती लड़कों ने लालाजी की ठिठौली करते हुए कहा- 'लालाजी, आपने हमारी एक

एक मूर्ति बनाने वाले ने बहुत ही सुन्दर मूर्ति बनाई। बहुत देर तक उलट-पलट कर उसे देखता रहा और फिर मूर्ति को देखकर वह फूट-फूटकर रोने लगा। लोगों ने मूर्तिकार से उसके रोने का कारण पूछा। तब मूर्तिकार ने कहा कि मुझे बहुत खोजने पर भी इसमें कोई गलती दिखाई नहीं पड़ी। यदि मेरी नजर बारीक गलती को नहीं पकड़ पायी तो भविष्य में इससे अच्छी मूर्तियाँ बनाने का द्वार ही बन्द हो जाएगा और मैं कभी भी इससे अच्छी मूर्ति नहीं बना सकूँगा। यही भावना व्यक्ति को प्रखर बनाती है कि कार्य में कहीं कोई गलती तो नहीं रही, बार-बार देखना चाहिए। केवल कार्य करके ही सन्तुष्ट नहीं हो जाना चाहिए, उससे बेहतर क्या हो सकता है यह भी चिन्तन करना आवश्यक है।

प्रो. वेदकुमार 'वेदालंकार'

डॉ. पतंगे हॉस्पिटल, पतंगे रोड

मु. पो.-उमरगा, जिला-उस्मानाबाद

महाराष्ट्र-413606



दिन की छुट्टी रोक रखी है। उनकी ऐसी उद्वेगता पर लालाजी कभी गुस्सा नहीं होते थे बल्कि मुस्कुरा देते थे।

ये तो हुई पुरानी बातें। आज के गुरुकुल कुरुक्षेत्र की बात करें तो, अब गुरुकुल कुरुक्षेत्र का नाम देश में ही नहीं अपितु विदेशों तक पहुँच चुका है। देश के अलग-अलग 18 प्रदेशों सहित विदेशों से भी विद्यार्थी यहाँ अक्षरज्ञान और संस्कारों की शिक्षा लेने आते हैं। गुरुकुल कुरुक्षेत्र को हाल ही में हरियाणा का नंबर वन आवासीय विद्यालय चुना गया है। अब गुरुकुल में आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित अनेक छात्रावास हैं। वातानुकूलित प्रयोगशालाएं, लाइब्रेरी और स्मार्ट क्लास रूम को देखकर अभिभावक अभिभूत हो जाते हैं। लगभग 1450 विद्यार्थी यहाँ अध्ययन कर रहे हैं।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र को नवीन स्वरूप प्रदान करने में सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका हिमाचल प्रदेश के महामहिम राज्यपाल एवं गुरुकुल के संरक्षक आचार्य देवव्रत जी ने निभाई। उन्होंने 35 वर्षों तक अनथक मेहनत, कठिन परिश्रम और अपनी सृष्टिबुद्धि से गुरुकुल को नई ऊँचाइयों प्रदान की। किसी समय में जर्जर हालत में रहा गुरुकुल कुरुक्षेत्र आज अपनी भव्यता और परीक्षा परिणाम को लेकर पूरे देश में चर्चा का विषय बना हुआ है। समय-समय पर सामाजिक व राजनीतिक क्षेत्र से जुड़े अनेक महानुभाव गुरुकुल का दौरा करते रहते हैं। गुरुकुल के विषय में जितना लिखा जाए उतना कम है। अन्त में बस इतना ही कहूँ कि गुरुकुल कुरुक्षेत्र में छात्रों का सर्वांगीण विकास किया जाता है। यहाँ बच्चों के शिक्षा, स्वास्थ्य और संस्कार पर पूरा ध्यान होता है। अभिभावकों को चाहिए कि अपने बच्चों को गुरुकुल कुरुक्षेत्र का भ्रमण अवश्य करायें जिससे वे भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के साथ-साथ आधुनिक शिक्षा के इस अनूठे संगम को अनुभव कर सकें। **समाप्त।**

श्रेष्ठ भक्त समस्त प्राणियों में ईश्वर को देखता है।

गृहस्थ में ईश्वर प्राप्ति

एक बार एक राजा ने अपने मंत्री से पूछा कि 'क्या गृहस्थ में रहकर भी ईश्वर को प्राप्त किया जा सकता है? मंत्री ने उत्तर दिया- हाँ, श्रीमान् ऐसा हो सकता है। राजा ने पूछा कि यह किस प्रकार संभव है? मंत्री ने उत्तर दिया कि इसका ठीक-ठीक उत्तर एक महात्मा जी दे सकते हैं जो यहाँ से गोदावरी नदी के पास एक घने वन में रहते हैं।

राजा अपने प्रश्न का उत्तर पाने के लिए दूसरे दिन मंत्री को साथ लेकर उन महात्मा से मिलने चल दिया। कुछ दूर चलकर मंत्री ने कहा- महाराज, ऐसा नियम है कि जो उन महात्मा से मिलने जाता है, वह रास्ते में चलते हुए कीड़े-मकोड़ों को बचाता चलता है। यदि एक भी कीड़ा पाँव से कुचल जाए तो महात्मा जी श्राप दे देते हैं। राजा ने मंत्री की बात स्वीकार कर ली और खूब ध्यानपूर्वक आगे की जमीन देख देखकर पैर रखने लगे। इस प्रकार चलते हुए वे

महात्मा जी के पास जा पहुँचे।

महात्मा ने दोनों को सत्कारपूर्वक बिठाया और राजा ने पूछा कि आपने रास्ते में क्या-क्या देखा मुझे बताइए। राजा ने कहा- भगवन् मैं तो आपके श्राप के डर से रास्ते के कीड़े-मकोड़ों को देखता आया हूँ इसलिए मेरा ध्यान दूसरी ओर गया ही नहीं, रास्ते के दृश्यों के बारे में मुझे कुछ भी मालूम नहीं है।

इस पर महात्मा ने हँसते हुए कहा- राजन् यही तुम्हारे प्रश्न का उत्तर है। मेरे श्राप से डरते हुए तुम आये उसी प्रकार ईश्वर के दण्ड से डरना चाहिए, कीड़ों को बचाते हुए चले, उसी प्रकार दुष्कर्मों से बचते हुए चलना चाहिए। रास्ते में अनेक दृश्यों के होते हुए भी वे दिखाई न पड़े। जिस सावधानी से तुम मेरे पास आये हो, उसी से जीवन क्रम चलाओ तो गृहस्थ में रहते हुए भी ईश्वर को प्राप्त कर सकते हो। राजा ठीक उत्तर पाकर संतोषपूर्वक लौट आये।

बोलो कब किसने रोका है?

जीवन की खुशियाँ दामन में, भरने से किसने टोका है ?
स्वच्छंद फलक में उड़ने को, बोलो कब किसने रोका है ?

क्यों पथिक अभी से हार रहे, मन की अभिलाषा मार रहे।
पर मारी गई अभिलाषाओं से, कब किसने रण को जीता है।।
स्वच्छंद फलक में उड़ने को, बोलो कब किसने रोका है ?

देखो हर दिन चीर तमस को, निशान्त व्योम से निकल रहा।
पर नित-नित डूब डूबकर भी, वो उगकर उजियारा लाता है।।
स्वच्छंद फलक में उड़ने को, बोलो कब किसने रोका है ?

एक जरा-सी चिंगारी को, मैंने जंगल दहकाते देखा है,।
अपनी ताकत पहचान मनुज, कब तुमने खुद को तोला है।।
स्वच्छंद फलक में उड़ने को, बोलो कब किसने रोका है ?

बेशक कुछ अपने रूठ गए, अशकों से आंसू छूट गए।
पर रोने वाले राही को, 'ओमपाल' कौन सहलाता है ?
जीवन की खुशियाँ दामन में भरने से किसने टोका है ?
स्वच्छंद फलक में उड़ने को, बोलो कब किसने रोका है ?

रचना : डॉ ओमपाल शर्मा

भारत बनाम इंडिया

इण्डिया ले गया आजादी को, बंदी अभी तक भारत है।
बिगड़ चुकी है भाषा, भूषा, चरित्र हुआ यहाँ गारत है।।
श्रम को तो सम्मान नहीं, मॉडलिंग पर इनाम मिले।
इतिहासकारों ने गुल खिलाये, देशभक्त गुमनाम मिले।।
धूल भरा हीरा है भारत, इण्डिया रहे आसमानों में।
भारत के तन पर फटे चीथड़े, इण्डिया विदेशी परिधानों में।।
देह प्रदर्शन करती नारी, ऋषि संस्कृति का कर उपहास।
काम शिक्षा की वकालत कर शिक्षा का क्रिया सत्यानाश।।
चील और कौए का भोजन खाने लगे इण्डिया के लोग।
धर्म मोक्ष सब छूट गये सबको लगा पैसे का रोग।।
भारत लड़ता आतंकवाद से, इण्डिया करता समझौते।
यदि समय पर जाग जाते तो, पाक के मालिक हम होते।।
वह देश धरा से मिट जाता है, भूले जो अपने बलिदान।
निज संस्कृति भाषा-भूषा का, जिसको नहीं तनिक अभिमान।।
इसलिए कहता हूँ सुन लो, ओ इण्डिया के मतवालों।
भारत को भारत रहने दो, घर में विषधर मत पालो।।
युगों-युगों से चलती आई, धारा कभी न सूखेगी।
ऋषि संस्कृति के हत्यारों ! फिर पीढ़ी तुम पर थूकेगी।।

भक्ति अपने विश्वास और मनोवृत्ति पर निर्भर होती है।

एक उत्तम विचारधारा है गुरुकुल शिक्षा पद्धति : आचार्य देवव्रत

गुरुकुल शिक्षा उत्सव में हिमाचल के मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर मुख्य अतिथि के रूप में पहुंचे

कुरुक्षेत्र, 25 मार्च 2018 : राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी ने कहा कि गुरुकुल शिक्षा पद्धति एक उत्तम विचारधारा है जहाँ बच्चों का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित किया जाता है। राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी, जो गुरुकुल कुरुक्षेत्र के संरक्षक भी हैं, गुरुकुल शिक्षा उत्सव की अध्यक्षता करते हुए अभिभावकों को सम्बोधित कर रहे थे। गुरुकुल शिक्षा उत्सव में हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर बतौर मुख्यातिथि उपस्थित रहे।

आचार्य देवव्रत जी ने अभिभावकों से फर्जी गुरुकुलों से सचेत रहने की अपील करते हुए कहा कि केवल 'गुरुकुल शब्द' लगा देने से कोई संस्थान गुरुकुल विचारधारा से परिपूर्ण नहीं हो जाता है। उन्होंने कहा कि पिछले कई वर्षों से अभिभावकों के दबाव के चलते उन्होंने गुरुकुल की तर्ज पर गुरुकुल नीलोखेड़ी और लड़कियों के लिए अम्बाला स्थित चमनवाटिका कन्या गुरुकुल की स्थापना की है। इन संस्थानों में आधुनिक शिक्षा के साथ-साथ बच्चों के स्वास्थ्य और संस्कार पर भी विशेष ध्यान दिया जाता है। उन्होंने कहा कि भविष्य में अभिभावकों की मांग के अनुरूप और गुरुकुल स्थापित किये जाएंगे। उन्होंने बताया कि 'गुरुकुल शिक्षा उत्सव' में इस बार 19 राज्यों के करीब 8000 छात्र भाग ले रहे हैं जिनमें से मेरिट के आधार पर चुने गये केवल 300 विद्यार्थियों को ही प्रवेश दिया जाएगा।

उत्सव में बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित मुख्यमंत्री हिमाचल प्रदेश श्री जयराम ठाकुर ने कहा कि उन्होंने गुरुकुल कुरुक्षेत्र की काफी चर्चा सुनी थी लेकिन आज यहाँ आकर उससे गुरुकुल को उससे बढ़कर पाया है। प्राचीन भारतीय परम्परा के साथ-साथ यहाँ आधुनिक शिक्षा दी जा रही है। उन्होंने कहा कि समय के साथ-साथ हमारी संस्कृति, संस्कार एवं परम्पराएं जो पीछे छूट गयी थीं, उन्हें पुनर्स्थापित करने में गुरुकुल कुरुक्षेत्र महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है और विशेष तौर पर इसका श्रेय राज्यपाल आचार्य देवव्रत को जाता है।

मुख्यमंत्री ठाकुर ने कहा कि हिमाचल सौभाग्यशाली है कि उन्हें ऐसे कर्मशील राज्यपाल का मार्गदर्शन मिला है जो सामाजिक सरोकार के विभिन्न विषयों को लेकर हर समय जन चेतना अभियान चलाए हुए हैं। उन्होंने राज्यपाल की शून्य लागत प्राकृतिक कृषि के अभियान का विशेष तौर पर जिक्र करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की मुख्यमंत्रियों के साथ हाल ही की बैठक में उनके इस महत्वपूर्ण अभियान का जिक्र किया गया, जो आचार्य जी के व्यक्तित्व को दर्शाता है। राज्यपाल के इस अभियान को आगे बढ़ाते हुए प्रदेश सरकार ने अपने पहले बजट में प्राकृतिक कृषि के लिए 25 करोड़ रुपये का प्रावधान किया है और भविष्य में राज्य इस दिशा में और प्रभावी कदम उठाएगा। उन्होंने कहा कि उन्होंने गुरुकुल के प्राकृतिक कृषि पर आधारित उद्यान का भ्रमण किया तथा गुरुकुल परिसर में स्थापित विभिन्न संकार्यों का अवलोकन कर वह दंग रह गये। यहाँ पर 35 वर्षों की राज्यपाल आचार्य देवव्रत के अथक प्रयास स्पष्ट झलकते

हैं लेकिन राष्ट्र-निर्माण में संस्कारित शिक्षा-पद्धति उनकी उल्लेखनीय उपलब्धि है।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी, प्राचार्य कर्नल अरुण दत्ता ने राज्यपाल, मुख्यमंत्री तथा अन्य गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया तथा विद्यालय की विभिन्न गतिविधियों से अवगत कराया। इससे पूर्व राज्यपाल ने मुख्यमंत्री को तथा गुरुकुल प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी ने हिमाचल भाजपा अध्यक्ष सतपाल सिंह सत्ती को स्मृति-चिह्न भेंट कर सम्मानित किया। राज्यपाल तथा मुख्यमंत्री ने सामूहिक रूप से गुरुकुल के वार्षिक कैलेंडर का विमोचन भी किया। मंच संचालक नंदकिशोर आर्य ने गुरुकुल के इतिहास एवं राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी के गुरुकुल निर्माण में योगदान की जानकारी दी। उत्सव में हिमाचल प्रदेश भाजपा अध्यक्ष सतपाल सिंह सत्ती, गुरुकुल कुरुक्षेत्र के प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी, राज्यपाल के ओएसडी डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार, प्रमुख उद्योगपति राकेश जैन, माइक्रोटेक के चेयरमैन सुबोध गुप्ता, सह-प्राचार्य शमशेर सिंह तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

गुरुकुल में एन.सी.सी.कैडेट्स द्वारा लगाया गया रक्तदान शिविर, 68 यूनिट रक्त एकत्रित हुआ

कुरुक्षेत्र, 14 मार्च 2018 : गुरुकुल कुरुक्षेत्र में 10 हरियाणा बटालियन एन.सी.सी. द्वारा रक्तदान शिविर आयोजित किया गया जिसका शुभारम्भ गुरुकुल के प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी व प्राचार्य कर्नल अरुण दत्ता ने किया। रक्तदान शिविर में विभिन्न महाविद्यालयों के एन.सी.सी. कैडेट्स ने रक्तदान कर मानवता का परिचय दिया। रक्तदान शिविर से पूर्व 10 हरियाणा बटालियन एन.सी.सी. विंग के कमान अधिकारी कर्नल पी.पी. सिंह व गुरुकुल के निदेशक एवं प्राचार्य कर्नल अरुण दत्ता ने रक्तदाताओं को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि रक्तदान से बड़ा कोई दान नहीं, इसलिए इसे महादान की संज्ञा दी गई। रक्त का दुनिया में कोई विकल्प नहीं है, इसलिए हर स्वस्थ व्यक्ति को रक्तदान करना चाहिए, ताकि जरूरतमंद व्यक्ति की जान बचाई जा सके। उन्होंने कहा कि रक्तदान करने से शरीर पर कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ता बल्कि इससे हमारा शरीर स्वस्थ रहता है। हमारे शरीर में रक्तदान करने से ताजा रक्त बनता रहता है तथा व्यक्ति में ऊर्जा का संचार सदैव बना रहता है। रक्तदान शिविर में सिविल अस्पताल कुरुक्षेत्र के डॉक्टरों की टीम ने 68 यूनिट रक्त संचित किया। गुरुकुल के एन.सी.सी. अधिकारी लैफ्टिनेंट श्रवण कुमार ने कहा कि यह रक्त जरूरतमंद व्यक्तियों की जान बचाने में सहायक सिद्ध होगा, इसलिए एन.सी.सी. कैडेट्स को बढ-चढकर रक्तदान करना चाहिए। इससे मानव की मानव के प्रति लगाव भावना बढ़ेगी और देश समृद्ध व जागरूक होगा।

जन्मदिवस पर विशेष : पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी

पं. गुरुदत्त विद्यार्थी आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् थे। पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी की गिनती आर्य समाज के पाँच प्रमुख नेताओं में की जाती थी। दयानन्द सरस्वती के देहान्त के बाद गुरुदत्त विद्यार्थी ने उनकी स्मृति में (दयानन्द एंग्लो वैदिक कॉलेज) की स्थापना का प्रस्ताव रखा था। गुरुदत्त विद्यार्थी, लाला लाजपत राय और लाला हंसराज के प्रयत्नों से ही 1 जून, 1886 को लाहौर, पाकिस्तान में डीएवी स्कूल की स्थापना हुई थी।

पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी का जन्म 26 अप्रैल, 1864 ई. में ब्रिटिश कालीन पाकिस्तान के मुल्तान में प्रसिद्ध वीर सरदाना कुल में हुआ था। इनके पिता का नाम लाला रामकृष्ण था, जो फारसी के प्रसिद्ध विद्वान् थे। गुरुदत्त जी ने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा मुल्तान में पाई और फिर लाहौर आ गए। यहाँ लाला हंसराज और लाला लाजपत राय भी पढ़ रहे थे। तीनों की आपस में बहुत घनिष्ठता हो गई। गुरुदत्त को विज्ञान में रुचि थी, इसके कारण वे हर चीज को विज्ञान की कसौटी पर कस कर देखते थे। पण्डित गुरुदत्त ने विज्ञान वर्ग से एम.ए. तक की शिक्षा प्राप्त की थी। सन् 1883 में जब स्वामी दयानन्द सरस्वती बीमार थे, तो लाहौर से दो लोगों को उनकी सेवा के लिये भेजा गया, जिसमें से एक गुरुदत्त भी थे।

गुरुदत्त जन्म से अत्यन्त मेधावी थे और वैरागी प्रकृति के थे। विद्यार्थी जीवन व युवावस्था में पुस्तकों को पढ़ने में आपकी सर्वाधिक रुचि एवं लगन थी। बचपन में ही आपने उर्दू व अंग्रेजी के प्रसिद्ध विद्वानों के ग्रन्थों को पढ़ लिया था। पाश्चात्य वैज्ञानिकों की तरह ही आप नास्तिक तो नहीं परन्तु ईश्वर के अस्तित्व में संशयवादी अवश्य हो गये थे। लाहौर स्थित देश के सुप्रसिद्ध गर्वनमेंट कालेज के आप सबसे अधिक मेधावी व योग्यतम विद्यार्थी थे तथा अपनी कक्षा में सर्वप्रथम रहा करते थे। विज्ञान में एम.ए. में भी आप पूरे पंजाब में सर्वप्रथम रहे। यद्यपि आप व्यायाम आदि करते थे और स्वास्थ्य का ध्यान भी रखते थे परन्तु पढ़ने का शौक ऐसा था कि इस कारण से आप असावधानी कर बैठते थे।

महर्षि दयानन्द के जीवनकाल 1825-1883 में देश भर के अनेक लोग उनके सम्पर्क में आये जिनमें से कई व्यक्तियों को उनका शिष्य कहा जा सकता है परन्तु सभी शिष्यों में पं. गुरुदत्त विद्यार्थी उनके अनुपम व अन्यतम शिष्य थे। सभी मित्र और निकट सहयोगी आपको वैदिक धर्म का सच्चा विद्वान् व नेता स्वीकार करते थे। पं. गुरुदत्त विद्यार्थी को इस बात का श्रेय प्राप्त था कि उन्होंने महर्षि दयानन्द के न केवल दर्शन ही किए थे अपितु उनकी मृत्यु के दृश्य को कुछ ही दूरी से सामने से देखा था। महर्षि दयानन्द के बाद उनके साक्षात् शिष्यों में संस्कृत व्याकरण का कोई प्रमुख प्रथम विद्वान् हुआ तो वह आप ही थे। संस्कृत के प्रचार-प्रसार का कार्य महर्षि दयानन्द

के बाद यदि प्रथम प्रभावशाली रूप से किसी ने किया तो वह पं. गुरुदत्त जी ने ही किया। आपने अपने घर पर ही संस्कृत श्रेणी व कक्षाएँ खोल रखी थी जिसमें सरकारी सेवा में कार्यरत बड़ी संख्या में लोग संस्कृत अध्ययन किया करते थे जिनमें कई उच्चाधिकारी थे। संस्कृत पर आपके असाधारण अधिकार का प्रमाण आपका ईश, माण्डूक्य व मण्डूक उपनिषदों का अंग्रेजी में किया गया प्रभावशाली व प्रशंसनीय भाष्य एवं अनुवाद है। यह कार्य उन दिनों सरल नहीं था और इस कोटि का भाष्य अंग्रेजी में किया जाना शायद किसी के लिए भी सम्भव नहीं था।

स्वामी दयानन्द के देहान्त के बाद गुरुदत्त ने उनकी स्मृति में श्दयानन्द एंग्लो वैदिक कॉलेज की स्थापना का प्रस्ताव रखा। इस विद्यालय के कार्य के लिये गुरुदत्त ने देश के कई भागों में सभाएं कीं और वैदिक ज्ञान के साथ अंग्रेजी के ज्ञान की महत्ता भी बताई। लाजपत राय के जोशीले भाषण, गुरुदत्त की अपील और लाला हंसराज के प्रयत्नों से तीन साल में 20 हजार नकद और 44 हजार रुपये के आश्वासन उन्हें मिले। अन्त में 1 जून, 1886 को लाहौर में डीएवी स्कूल की स्थापना हो गई और लाला हंसराज इस विद्यालय के प्रथम प्राचार्य नियुक्त हुए।

पण्डित जी का जीवन बहुआयामी जीवन था। वह लोकप्रिय वक्ता व उपदेशक थे। जनता उनके विचारों को ध्यान से सुनती थी और उनकी बातों का पालन करती थी। वह ऐसे वक्ता थे जिनकी कथनी व करनी एक थी। वह अपने जीवन का एक-एक क्षण वैदिक धर्म, संस्कृति के उत्थान व संवृद्धि के लिए व्यतीत करते थे। उनके कार्यों का उद्देश्य वैदिक धर्म का अभ्युदय, सामाजिक सुधार व देश सुधार, अविद्या का नाश व विद्या की वृद्धि, लोगों को ज्ञानी बनाकर देश व विश्व से सभी प्रकार के अज्ञान व अन्धविश्वासों को दूर करना आदि था। वह अपने समय के सबसे कम आयु के अजेय धार्मिक योद्धा थे। उनके कार्यों से वैदिक धर्म का संवर्धन हुआ जिसके लिए देश और समाज उनका ऋणी है।

पं. गुरुदत्त विद्यार्थी के दो अंग्रेजी लेख (वैदिक संज्ञा विज्ञान) तथा (वैदिक संज्ञा विज्ञान व यूरोप के विद्वान) को ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में शामिल किया गया था। क्षय रोग के कारण 19 मार्च, 1890 को महज 26 वर्ष की आयु में उनका देहान्त हो गया, किन्तु उतने ही समय में उन्होंने अपनी विद्वता की छाप छोड़ी और अनेकानेक विद्वतापूर्ण ग्रन्थों की रचना की। परिवार में उनकी माता, पत्नी व दो छोटे पुत्र थे। पण्डित जी की मृत्यु पर न केवल आर्य समाज के नेताओं ने अपितु अनेक मतों के विद्वानों ने भी उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए शोक प्रकट किया था।

साभार : भारतकोष

गुरुकुल कुरुक्षेत्र : संक्षिप्त परिचय

गुरुकुल कुरुक्षेत्र में शैक्षणिक स्तर पर दो प्रकल्प चलते हैं। सी.बी.एस.ई. पाठ्यक्रम के अनुसार 10+2 तक का विद्यालय है जो ISO 9001: 2008 प्रमाणित संस्थान है। इस पाठ्यक्रम के अनुसार यहाँ लगभग 1500 विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। दूसरा आर्ष महाविद्यालय है जिसमें वैदिक व्याकरण व वैदिक साहित्य का अध्ययन कराया जाता है। इन शिक्षण प्रकल्पों के अतिरिक्त शिक्षा, समाज सेवा व सामाजिक चेतना को ध्यान में रखते हुए जो विविध गतिविधियाँ चलाई जा रही हैं, इनकी संक्षिप्त झलक निम्न प्रकार है -

प्रशासनिक विभाग : आधुनिक तीन मंजिला प्रशासनिक भवन में अतिथियों के लिए 250 कुर्सियाँ एवं सुविधायुक्त वातानुकूलित सभागार व कार्यालय हैं।

आर्ष महाविद्यालय : वैदिक धर्म एवं वेदों के प्रचार हेतु आर्ष पाठ विधि से व्याकरण एवं वेद के विद्वान् तैयार किये जा रहे हैं।

वातानुकूलित संगणक प्रयोगशालाएँ : गुरुकुल में वातानुकूलित कम्प्यूटरीकृत शिक्षा-व्यवस्था है। यहाँ 75 कम्प्यूटर हैं जिन पर छोटे-बड़े छात्रों हेतु अलग-अलग व्यवस्था है। इनमें प्रोजेक्टर और वाई-फाई की सुविधा भी है।

वातानुकूलित भाषा व विज्ञान प्रयोगशालाएँ : शिक्षा को व्यावहारिक रूप देने व छात्रों के पूर्ण विकास हेतु बहुतकनीकी यन्त्रों से युक्त व दृश्य-श्रव्य यंत्रों से सुसज्जित प्रयोगशालाएँ हैं।

वातानुकूलित पुस्तकालय व वाचनालय : छात्रों के विकास हेतु वेद, उपनिषद्, वेदांग एवं स्वतन्त्रता सेनानियों का इतिहास व महापुरुषों की जीवनियाँ तथा विज्ञान, दर्शन सम्बन्धी हजारों पुस्तकें व सी.डी. आदि हैं। 21 दैनिक समाचार पत्र एवं 75 साप्ताहिक व मासिक पत्रिकाएँ आती हैं।

अत्याधुनिक गोशाला : छात्रों को शुद्ध एवं पौष्टिक दुग्ध उपलब्ध कराने के लिए गुरुकुल में अत्याधुनिक गोशाला है। जहाँ पर विभिन्न देशी व विदेशी नस्ल की लगभग 282 गायें हैं जो प्रतिदिन 1150 लीटर दूध देती हैं।

अश्वारोहण (घुड़सवारी) : इसके लिए उत्तम नस्ल के 8 घोड़ियाँ व 1 घोड़ा है। कुशल प्रशिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण दिया जाता है।

क्लीनिकल लेबोरेट्री : पशुओं की विभिन्न बीमारियों से संबंधित टेस्ट हेतु लैब है जहाँ पर अनुभवी डॉक्टर द्वारा पेशाब, खून व दूध आदि की प्रामाणिक जाँच की जाती है।

शूटिंग (निशानेबाजी प्रशिक्षण) : इसके माध्यम से गुरुकुल ने अभी तक 10 अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ी राष्ट्र को दिये हैं।

एन.सी.सी (छोटे-बड़े छात्रों हेतु) : गुरुकुल एन.सी.सी. के छात्र गणतन्त्र व स्वतंत्रता दिवस की परेड में भाग ले चुके हैं तथा एन.सी.सी. के कैम्पों में प्रथम स्थान प्राप्त कर चुके हैं।

नेशनल डिफेंस एकेडमी (एन.डी.ए.) : सेवानिवृत्त सेना अधिकारी के मार्गदर्शन में एन.डी.ए. परीक्षा की तैयारी के लिए दो एकड़ भूमि पर ऑब्स्टेकल कोर्स का निर्माण किया गया है।

एन.एस.एस विंग : राष्ट्रीय एकता व सामाजिक सद्भाव हेतु एन.एस.एस. द्वारा सामाजिक चेतना जागृत की जाती है।

विशाल भोजनालय : छात्रों, गुरुकुल से जुड़े सभी कर्मचारियों एवं अतिथियों हेतु विशाल भोजनालय की व्यवस्था है।

संगीतमय फव्वारे : गर्मियों की उमस से बचने एवं मनोरंजनपूर्ण स्नान के लिए आकर्षक संगीतमय फव्वारें गुरुकुल में हैं।

पं. अमीचन्द संगीत केन्द्र : छात्रों को मनोरंजन एवं संगीत शिक्षण हेतु भक्त अमीचन्द संगीत केन्द्र में संगीत की शिक्षा-व्यवस्था है।

योग एवं प्राकृतिक चिकित्सालय : गुरुकुल में योग एवं प्राकृतिक चिकित्सालय है जो गम्भीर रोगों के उपचार के साथ चिकित्सा सम्बन्धी 'डिप्लोमा इन योग एंड साइंस' कोर्स भी कराता है।

धन्वन्तरि चिकित्सालय : छात्रों के शारीरिक स्वास्थ्य एवं खेलकूद में आने वाली हल्की चोट-मोच आदि के लिए आयुर्वेदिक चिकित्सालय में कुशल वैद्यों की व्यवस्था है।

वेद प्रचार विभाग : भारतीय संस्कृति एवं वेदों के प्रचार हेतु गुरुकुल में वेद प्रचार विभाग का गठन किया गया। जिसके तहत लगभग डेढ़ दर्जन प्रचारक दिन-रात विभिन्न क्षेत्रों में घूम-घूम कर लोगों को वेदवाणी और आर्य सिद्धान्तों के प्रति जागरूक कर रहे हैं। वहीं योग शिक्षकों के माध्यम से विद्यालय व कॉलेजों में योग एवं चरित्र निर्माण अभियान चलाया जा रहा है।

इनके अतिरिक्त जीरो बजट प्राकृतिक कृषि फार्म, स्वामी श्रद्धानन्द आयुर्वेदिक फार्मसी, आकर्षक पौधशाला (नर्सरी) भी है। आर्य भजनोपदेशक प्रशिक्षण केन्द्र, जिसमें आर्य भजनोपदेशक तैयार किये जाते हैं। वहीं 'गुरुकुल-दर्शन' मासिक पत्र के माध्यम से वैदिक धर्म एवं संस्कृति का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है।

सद्भक्ति हमें ऊपर ले जाती है जबकि असद्भक्ति हमें नीचे गिराती है।



हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर जी का युरुकुल भ्रमण



गुरुकुल की विविध गतिविधियाँ



वेद प्रचार क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने पर गुरुकुल के प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी को सम्मानित करते हुए आर्यसमाज पूण्डरी के पदाधिकारी



एन.सी.सी द्वारा गुरुकुल में लगाये गये रक्तदान शिविर में रक्तदानियों का हौसला बढ़ाते हुए गुरुकुल के प्रधान कुलवन्त सैनी एवं प्राचार्य कर्नल अरुण दत्ता



'जीरो बजट प्राकृतिक कृषि' फार्म हेतु नये ट्रैक्टर को कृषि अधिकारी गुरदीप सिंह को सौंपते करते हुए प्रधान कुलवन्त सैनी व सह-प्राचार्य शमशेर सिंह



10वीं व 12वीं के छात्रों को परीक्षा से पूर्व मीठी दही और लड्डू खिलाकर रवाना करते हुए गुरुकुल के प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी व प्राचार्य कर्नल अरुण दत्ता



गुरुकुल के छात्रावास में होली एवं नवसंस्पष्टि पर्व पर छात्रों को गुलाल लगाकर बधाई देते हुए प्रधान कुलवन्त सैनी, प्राचार्य कर्नल अरुण दत्ता



झुंझुनू से आए किसानों के प्रतिनिधि मंडल को आचार्य देवव्रत जी की 'जीरो बजट प्राकृतिक कृषि' पुस्तक भेंट करते हुए गुरुकुल के प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी

RNI Reg.No. : HARBIL / 2015 / 64244
Postal Regn. No. HR/KKR/181/2018-2020

स्वामी- गुरुकुल कुरुक्षेत्र, कुरुक्षेत्र के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक श्री कुलवन्त सिंह सैनी द्वारा क्रेजी ऑफसेट प्रिंटिंग प्रेस, सलाहपुर रोड, निकट डी.एन. कालेज, कुरुक्षेत्र (हरियाणा) से मुद्रित एवं गुरुकुल कुरुक्षेत्र, (निकट थर्ड गेट कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी), कुरुक्षेत्र से प्रकाशित। सम्पादक -कुलवन्त सिंह सैनी

मूल्य-15 रु एक प्रति (150 रु वार्षिक)

प्रतिष्ठा में
